॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

श्रीसाळंगपुर निवासी

श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी महिमा

वडताल मेनेजिंग बोर्डकी अनुमतिसे

साळंगपुर मन्दिर द्वारा प्रकाशित

: प्रकाशक :

श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी मन्दिर

महंत पुराणी श्रीविष्णुप्रकाशदासजी स्वामी - अथाणावाला

मु. साळंगपुर (हनुमान), ता. बरवाला,

जि. बोटाद, गुजरात. भारत. पीन-382450.

फोन : (02711) 241202, 241408

Website : www.salangpurhanumanji.com,

E-mail : shreesalangpur@gmail.com

श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी महिमा

मार्गदर्शक : प.पू. शा. स्वा. श्रीहरिप्रकाशदासजी
(अथाणावाला)

आलेखन व अनुवाद : डॉ. हर्षदभाई सतासिया

प्रकाशन तिथि : ई.स. २०१६, चैत्र सुद-१५,
(हनुमानजयंती) के उपलक्ष्य में

प्रत : 25,000

मूल्य : ₹ 7/-

: मुद्रक :

श्रीजी आर्ट, अहमदाबाद

फोन नं. +917940086686

मो. 9879606686

E-mail : shreejiart@gmail.com

www. shreejiarts.org

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	विज्ञप्ति	05
२.	भगवान स्वामिनारायणका संक्षिप्त जीवनचरित्र	09
३.	श्रीगोपालानन्दस्वामीका संक्षिप्त जीवनचरित्र	16
४.	श्रीकष्टभंजनदेवकी महिमा	22
५.	भक्तचिंतामणिका १४२ वाँ प्रकरण	27
६.	श्रीकष्टभंजन हनुमानजीकी आरती	35
७.	श्रीहनुमत्स्तोत्र तथा मंत्र	36
८.	श्रीहनुमत्स्तोत्र शतानंदमुनिकृत (नीतिप्रवीण)	39
९.	श्रीमारुतिस्तोत्र (मुक्तानंदस्वामीकृत)	41
१०.	जनमंगलस्तोत्रम्	46

११.	जनमंगल नामावली	50
१२.	नारायणकवच	57
१३.	हरिकवच	70
१४.	हनुमान चालीसा	86
१५.	संकटमोचन हनुमानाष्टक स्तुति	92
१६.	श्रीगोपालानंदस्वामीकृत श्रीसहजानंदस्वामीका मंत्र	96
१७.	पूजापाठ विधि	103
१८.	सूचना	104
१९.	दर्शनीय स्थल	109

❖ ❖ ❖

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीकष्टभंजनदेवो विजयतेतराम् ॥

विज्ञप्ति

हमारे इष्टदेव भगवान श्रीस्वामिनारायण महाप्रभु ने 'शिक्षापत्री' में आदेश दिया है कि -

भुताद्युपद्रवे क्वापि वर्म नारायणात्मकम् ।
जप्यं च हनुमन्मंत्रो जप्यो न क्षुद्रदैवतः ॥

॥ शिक्षापत्री श्लोक ८५ ॥

अर्थात् हमारे आश्रित सत्संगीको यदि भूतप्रेतादि का कभी उपद्रव हो तो उस समय हनुमानजीके मन्त्रका जप करे इसके सिवा अन्य कोई क्षुद्र देव के स्तोत्र या मन्त्रका जप ना करे ।

श्री सहजानन्द स्वामीके इस आदेशको ध्यान में रखकर, हमारे संप्रदायके सिद्धांत और मर्यादाको श्रीहरिके हि आदेशके अनुसार प्रतिष्ठित करनेवाले और श्रीहरिके स्वरुप और सिद्धांतके यथार्थ ज्ञाता

योगीराज अनादिमूलअक्षर स.गु. श्रीगोपालानन्द स्वामीने मनुष्य मात्रके भूतप्रेतादि दु:खोंको दूर करनेके लिए साळंगपुरमें श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी महाराजकी अपने शुभ हस्तोंसे स्थापना की है ।

भूतप्रेतादिका नियमन करनेमें समर्थ देव श्री हनुमानजी महाराजकी स्थापना करनेवाले स्वामी श्री गोपालानन्दजी स्वयं कितने महान और शक्तिशाली होंगे कि जिनके सामर्थ्यसे आज इतने वर्षोंके बाद भी हनुमानजी महाराज जनताका कष्ट निवारण कर रहे है । कलियुगका यह एक आश्चर्य है, लेकिन यह शत प्रतिशत सत्य भी है । ऐसे महान संत के बारे में जाननेकी इच्छा हो, यह स्वाभाविक है । अत: इस पुस्तिका में अ.मू.अ.स.गु. श्री गोपालानन्द स्वामी के जीवन का संक्षिप्त परिचय समाविष्ट किया गया है ।

इसके उपरांत, जो लोग वस्तुतः भूतप्रेत आदि से पीड़ित हैं उनके उद्धार के लिए, उस कष्ट से उनका छुटकारा हो इसलिए और जिनको अन्य कोई कष्टसे मुक्ति चाहिए या सुखप्राप्तिकी इच्छा हो, उनके लिये इस पुस्तिकामें साळंगपुर निवासी श्रीकष्टभंजन हनुमानदेवकी आरती, मन्त्र, स्तोत्र, श्रीहनुमान चालीसा, नारायणकवच, हरिकवच तथा जनमंगल स्तोत्र आदि उपयोगी साहित्य को समाविष्ट किया गया है ।

इस तरह कष्टनिवारक सभी मन्त्र, स्तोत्र आदि इस पुस्तिकामें समाविष्ट है । इसका पाठ करनेसे किसी भी प्रकारकी सिद्धि या इष्ट फलकी निर्विवाद रूपसे प्राप्ति होती है । इनका पाठ करनेसे भूतप्रेत आदिके कारण उत्पन्न दुःख नष्ट हो, देवका सत्य स्वरूप समझा जा सके और धर्मके प्रति सज्जनोंकी भावना बढ़े इस शुभ हेतुसे इस पुस्तिकाको तैयार

की गई है और साथ साथ इसी हेतुसे प्रेरित होकर गुजराती संस्करण की तरह, इसमें भी भक्तचिंतामणि ४२वाँ प्रकरण एवं श्री मुक्तानन्दस्वामीकृत श्रीहनुमत्स्तोत्र, मन्त्र और कवच को सम्मिलित किया गया है ।

इस सम्पूर्ण पुस्तिकाका हिन्दी भाषामें आलेखन व अनुवाद डॉ. हर्षदभाई सतासियाके द्वारा हुआ है ।

: निवेदक :

को. श्रीविवेकसागरदास स्वामी

गुरु : महंत पुराणी श्रीविष्णुप्रकाशदासजी स्वामी

(अथाणावाला)

श्री कष्टभंजनदेवाय नमः ॥

भगवान श्रीस्वामिनारायणका

संक्षिप्त जीवनचरित्र

श्रीमद् भगवद्गीतामे परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रने की हुई 'सम्भवामि युगे युगे' की उद्घोषणानुसार पृथ्वी पर जब अधर्म समूहका बल अतिवृद्धिको प्राप्त हुआ और उससे ब्रह्मनिष्ठ भक्तगण संतप्त होने लगे तब अकारण करुणासागर, अक्षरातीत, सर्वावतारधर्ता, अनंतकोटिब्रह्मांडाधीश, भक्तवत्सल श्रीपूर्णपुरुषोत्तमनारायणने पृथ्वी पर प्रकट होनेका संकल्प किया। जिनकी ईच्छाशक्ति मात्रसे अनेककोटि ब्रह्मांड उत्पत्ति-स्थिति और लयको प्राप्त होते है उस परमात्माके संकल्पबलसे भारतवर्षमेसे कई महान और पवित्रतम ऋषिमुनिओ के समूह अनेकविध तीर्थयात्रा सम्पन्न करके दर्शनकी लालसासे भगवान श्रीनरनारायणके पास बदरीकाश्रममें पहुँचे । धर्म-भक्ति-नारद-उद्धव समन्वित अनेक महर्षि भगवान नारायण के मुखारविन्दसे निःसृत शब्दमय अमृतका

पूर्णतः आस्वादन कर रहे थे तभी दुर्वासामुनि का आगमन हुआ । उनके आगमनसे अनभिज्ञ सबको उनके श्रापका भागी होना पड़ा । फलतः नारायणने कहा कि इस श्रापसे आप सबकी रक्षा करने मैं स्वयं अवतार धारण करुंगा । तत्पश्चात् जैसे रंगमंच पर महानायकके आगमनसे पूर्व अनेकविध पात्र पूर्वनिश्चिततानुसार प्रस्तुत होते हैं उसी प्रकार उन सब महर्षिओने यथायोग्य स्थान पर मनुष्याकृतिको धारण किया । उद्धवने मानव अवतारमें रामानंदस्वामी नाम धारण कर उद्धव सम्प्रदायकी स्थापना की । हरिप्रसाद और प्रेमवतिके रूपमें धर्म और भक्तिका प्रागट्य हुआ। समयानुसार उनका विवाह सम्पन्न हुआ और अयोध्याके समीपवर्ती छपैया नामक गाँवमे दम्पति निवास करने लगे । श्रीहरिकी ईच्छासे संकर्षणने उस पवित्र पति-पत्नीके यहाँ पुत्ररुपसे अवतरित होकर रामप्रताप नाम धारण किया । दुर्वासामुनिके श्रापके कारण पिता धर्मदेव एवं माता भक्तिको असुरो द्वारा

अनेकविध कष्ट प्राप्त हुए । जब जीवनमें कष्टोकी अविरत श्रृंखला दृष्टिगोचर होने लगी तब धर्मदेवने हनुमानगढी में कष्टभंजन देवकी शरण ली । हनुमानजीने पवित्र आराधनासे प्रसन्न होकर दर्शन दिये और वृंदावन जानेको कहा । धर्म और भक्ति अविलंब वृंदावन गये । ईश्वरेच्छासे वहाँ सब महर्षिओंका आगमन एवं परस्पर परिचय हुआ । सबने मिलकर परमेश्वरका परमाराधन किया फलतः साक्षात् भगवान श्रीकृष्णने प्रकट होकर यह वरदान दिया कि मैं धर्म और भक्तिके पुत्ररुपसे अवतरित होकर सबके कष्टोंको सद्य विनाशित करुंगा । तत्पश्चात् अपने वचनके अनुसार चैत्र शुक्ल नवमीकी रात्रीमें धर्म और भक्तिके गृहमें परात्पर पूर्ण पुरुषोत्तमनारायणने दिव्य मनुष्य शरीर धारण किया । घनश्याम अपनी बालोचित लीलाओंसे माता, पिता और छपैयापुरवासीओंको अति आनन्दित करते हुए और कालीदत्त जैसे महापराक्रमी राक्षसोंका अत्यंत सहजतासे मोक्ष करते

हुए तीन साल तक छपैयामें रहकर तत्पश्चात् अयोध्या आकर निवास करने लगे । अपने पिता धर्मदेवसे ही अनेकविध शास्त्रोंका अध्ययन किया । उपवीत संस्कारके पश्चात् वेदाध्ययन करके अति अल्पायुमे ही प्रकांड पण्डितोंको परास्त किया । माता एवं पिताको दिव्यगति प्रदान करनेके बाद अनंत जीवों पर अकारण करुणा बरसाने नीलकण्ठ स्वरूप धारण कर श्रीहरिने गृहत्याग किया । नितान्त निर्जन भयंकर एवं वन्य प्राणीओसे भरपूर वनोमें, प्रगाढ पर्वतोमें और अगम्य स्थानोमें जाकर नीलकण्ठने अनेक तपस्विओंकी तपस्याको, योगीओके योग को, राजर्षिओंके राज्यको एवं तीर्थोके तीर्थत्वको सफल किया । देवताओंसे भी दुष्कर तपश्चर्या करते हुए, योगशिक्षण आदि मानुषीलीलाका विस्तार करते हुए एवं अपने दर्शन मात्रसे कोटि जीवोंको मोक्षभागी बनाकर नीलकण्ठ गुजरातके सौराष्ट्र प्रान्तमे स्थित लोज नामक गाँवमें आये । वहाँ रामानन्दजीके आश्रममें स्थित मुनिवर

मुक्तानंदजीके प्रगाढ प्रेमने नि:स्पृही नीलकण्ठको उनके साथ रहनेके लिए बाध्य कर दिया । पीपलाणा नामक गाँवमें गुरुवर रामानंदस्वामी से भेंट कर एवं भागवती दीक्षा ग्रहण कर नीलकण्ठ 'सहजानन्द स्वामी' हुए । उद्धावावतार सद्गुरुश्री रामानंदस्वामीने सहजानंदस्वामीको जेतपुरमें उद्धव सम्प्रदायकी धर्मधुरा प्रदान करके पाँच भौतिक देह का त्याग किया । सर्वावतारी श्रीसहजानन्दस्वामीने स्वयं अपना 'स्वामिनारायण' नामक महामन्त्र जप हेतु सबको प्रदान किया । अनेकविध सामाजिक कार्यो को करने पर भी जब उन्होने देखा कि सभी वर्ण सभी आश्रम और सब प्रकार के जीवों को मेरा पूर्ण परिचय नही हो रहा है और पूर्ण परिचयके बिना मुमुक्षुजनको जैसा चाहिये वैसा उपासन सुख प्राप्त नहि होगा तब परात्पर पूर्ण पुरुषोत्तम नारायणने समाधि प्रकरण जैसी सृष्टि में अदृष्टपूर्व एवं अश्रुतपूर्व ऐश्वर्य श्रृंखलाको प्रकट किया । अविरत और अनेकविध चमत्कार परमेश्वर

सहजानंद स्वामीके लिए अत्यंत सहज थे । भगवानश्री स्वामिनारायणने अनेक उच्च कोटिकी विचारधारा एवं उपासना वाले अपने आश्रितों को त्यागी दीक्षा देकर परमहंस बनाये । उन परमहंसोने अपमान कष्ट विगेरेको सहन करते हुए भी सृष्टिके विभिन्न प्रान्तोमें प्रकट भगवानकी उपासनाका प्रचार-प्रसार किया । अन्तर्यामि श्रीहरिके अच्छेद्य प्रभावसे जो भी उनके व उनके परमहंसोके सम्पर्कमें आया वह तन-मन-धन न्यौछावर करके शुद्ध एकान्तिक भक्त हुआ । भक्तगणको अभूतपूर्वसुख प्रदान करने हेतु परमेश्वर श्रीस्वामिनारायण भगवानने जन्माष्टमी-उत्सव, एकादशी उत्सव, शरदोत्सव, अन्नकूटोत्सव, रंगोत्सव, शाकोत्सव जैसे कई उत्सव तथा महारुद्र, विष्णुयाग जैसे कई महायज्ञ एवं अहमदाबाद, भुज, वरताल, धोलेरा, जुनागढ तथा गढडामें विशाल मन्दिरोंका निर्माण कराकर स्वहस्तकमलसे ही अपने विविध स्वरूपोंकी प्राणप्रतिष्ठा करके यावच्चन्द्रदिवाकरौ धोरी

मोक्षमार्ग की स्थापना की । जब उन्होने देखा कि अब विकराल कलिकालमें भी सत्ययुग जैसा वातावरण प्रस्थापित हो चुका है जिससे मुमुक्षुगणको भगवद्भक्तिमे कोई विक्षेप नही है तब 'शिक्षापत्री' नामक ग्रन्थ की रचना करके अपने आश्रितोको आचार संहिता प्रदान की और रघुवीरजी एवं अयोध्याप्रसादजी नामक दो आचार्यकी स्थापना करके उन दोनो आचार्य समेत समस्त सत्संग समाजकी जिम्मेदारी स.गु. श्री गोपालानंदजीको प्रदान करके सं. १८८६ ज्येष्ठ शुक्ल दशमीके दिन अपने शरीरको पंचभूतमें विलीन करके अक्षरधाममें स्थित हुए । तबसे लेकर आजतक अपने अनन्य आश्रितोंको अपना प्रत्यक्षत्व अविरत दृष्टिगोचर करवाते हुए श्रीहरि सत्संग समाज के बिच जैसे अनेक तारागणमें चन्द्र शोभायमान होता है वैसे ही सुशोभित है ।

❖ ❖ ❖

श्री गोपालानंद स्वामीका
संक्षिप्त जीवन चरित्र

अत्यंत पवित्रतमा भारतभूमिके ईडर राज्यान्तर्गत टोडला नामक गाँवमें माध्यन्दिनी शाखाके औदिच्य कुलदीपक श्रीमोतीराम ठाकर एवं कुशलादेवीके यहाँ संवत् १८३७ के माघ शुक्ल अष्टमीके दिन सूर्योदय के समय पुत्ररत्नका आविर्भाव हुआ । परात्पर परमेश्वर की ईच्छा से अवतरित होनेवाले एवं शारीरिक आभा-प्रभा ईत्यादि स्वरूपसे अलौकिक दिखाई देनेवाले इस बालक का नाम 'खुशाल' रखा गया । खुशाल की बाल्योचित लीलाओंको देखकर ग्रामजन आश्चर्यचकित रह जाते और निश्चित ही यह महान ईश्वरांश प्रगट हुआ है एसा अनुमान लगाते । यज्ञोपवीत संस्कारके पूर्व खुशालने अपने पितासे कइ सच्छास्त्रोंका अध्ययन किया एवं उपवीत ग्रहणके पश्चात् कुछ समय तक अपने गाँवसे थोडे दूर एक आचार्यके पास जाकर शिक्षा ग्रहण की । असाधारण

बुद्धि-प्रतिभावाले खुशालभट्टने शिक्षाग्रहण के पश्चात् टोडलामें पाठशाला शरु की । उनके निर्मल एवं उच्चतम आकर्षणसे आकर्षित होते हुए सेंकडो मातापिताने अपने बालकोंको खुशाल भट्टके पास शिक्षा ग्रहण करनेको भेजा । भक्त प्रहलादकी तरह जिसका मन अविरत भगवद् भक्तिसे ओत-प्रोत था ऐसे खुशाल भट्ट अध्यापनके साथ साथ आध्यात्मिकताके उत्तम संस्कारोंका सिंचन उन बालको में करते थे । प्रागट्यसे लेकर कोई एसा दिन नहि जिसमे खुशाल ने कोई चमत्कार न दिखाया हो । नि:स्वार्थ भक्ति एवं सांसारिकतासे वैराग्य के कारण खुशालका अधिकांश समय भगवदाराधन एवं ध्यानमे व्यतीत होता था । इतनी अल्प आयुमें ध्यानका ऐसा गहन अभ्यास एवं यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-ध्यान-धारणा और समाधिमें नितान्त निपुणता देखकर सब लोग उनको योगीराज कहकर सम्बोधित करने लगे । एकबार अनावृष्टिसे पीडित लोगोने

आकर खुशालभट्टसे विनंति की और कहा कि जलके अभावमे अब पशु-पक्षी भी मृत्युको प्राप्त हो रहे है, आप दया किजीये । उनकी आर्तवाणी सुनकर खुशालका हृदय भर आया और उन्होने आकाशकी तरफ देखकर त्राटक किया । कुछ ही क्षणमें गाजबीजके साथ वर्षाका आरंभ हुआ और लगातार तीन दिन तक बारीस होती रही । मृत्युसे जीवनकी रक्षा, आकस्मिक उत्पातोंसे अभयदान, सहजतामें ही समाधि स्थितिका अनुभव करवाना जैसे अनेकानेक चमत्कारोसे परिपूर्ण खुशाल भट्ट का जीवन मानो पृथ्वी पर वैकुण्ठकी अनुभूति करा रहा था कि एक दिन भगवानश्री स्वामिनारायणके आश्रितोंसे भेंटके कारण भगवद्दर्शन और भगवद् सानिध्य की लालसासे खुशाल भट्टका अन्तःकरण ओतप्रोत हो गया । जैसे परम भक्त भगवानका वियोग सह नहि पाते तदवदेव भगवान भी ऐसे भक्तोंका विरह सहन नहि कर पाते अतएव स्वयं पुरुषोत्तम नारायण द्विजरुप धारण करके टोडलासे

खुशाल भट्टको साथ लेकर जेतलपुर आये । वहाँ भगवान श्रीस्वामिनारायण बिराजमान थे । ब्राह्मण ने कहा आप गाँवमें भगवानके समीप जाइये मैं स्नानादिक करके आऊँगा । परमेश्वरके दर्शनकी उत्कण्ठा खुशालको रोक नहि पाई और वे शीघ्र ही भगवानके सानिध्यमे पहुँच गये और दण्डवत प्रणाम करने लगे । भगवानने उनको आलिंगन दिया और मार्गमे जो जो घटित हुआ था सब कहा और बोले की मै ही ब्राह्मणके वेषमें तुम्हें लेने आया था । भगवानके श्रीचरणोंका सानिध्य पाकर खुशाल भट्टका मन अत्यधिक आनंदसे भर गया और वे भगवानकी सेवामें संलग्न हो गये । कुछ समयके बाद स्वयं श्रीहरिने संवत् १८६४ कार्तिक कृष्ण अष्टमीके दिन खुशाल भट्टको परमहंस की दीक्षा देकर 'गोपालानंद स्वामी' नामसे अभिहित किया ।

सद्गुरुवर्य श्रीगोपालानंदजीने श्रीहरिकी ईच्छानुसार सत्संगमें अविरत विचरण किया और

परमेश्वरकी शुद्ध उपासना-भक्तिका भक्तजनोंको ज्ञान दिया । स्वामीजी जहाँ जहाँ जाते थे दुःखी लोग का दुःख वहाँ वहाँ से नष्ट हो जाता था । उनके वैदुष्यपूर्ण और चमत्कारिक वचनोसे कई महाराजा भी भगवान श्रीस्वामिनारायणके आश्रित हुए । अनेकविध ऐश्वर्य-प्रदर्शनके साथ साथ स्वामीजीने अपनी कृपा प्रदर्शित करते हुए कई संस्कृत ग्रन्थोंका निर्माण किया । वचनामृत जैसे गहन सच्छास्त्रका सम्पादन किया । बोटादमे भगवान श्रीस्वामिनारायणके चरणारविन्द और सारंगपुरमें श्रीकष्टभंजनदेव जैसे अनेक प्रत्यक्ष चमत्कारी मूर्तिओ को प्रतिष्ठित किया । यदि उनके चमत्कारोका वर्णन लिखा जाय तो महाभारतसे भी बडा ग्रन्थ आलेखित हो सकता है परंतु संक्षेपमें कहे तो उनके श्रीचरणोंसे जो भी भूमि अंकित हुई वहाँ सुख-शांति एवं समृद्धिने अपना डेरा डाल दिया और दुःख-अशांति एवं दरिद्रताका सम्पूर्णतया नाश हुआ ।

श्रीहरिके तिरोधान पश्चात उद्धव सम्प्रदायके बन्धारणको सद्गुरु श्रीगोपालानंद स्वामीने सुनिश्चित किया । सबका यथार्थ मार्गदर्शन करते हुए और भगवान श्रीस्वामिनारायणका प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होने उद्धव सम्प्रदाय (श्रीस्वामिनारायण सम्प्रदाय) को कल्पनातीत विकसित किया । मिट्टि और पत्थरों से बने मंदिर की जगह उन्होने मनुष्योके मनमे भक्तिस्थ सिंहासनमे श्रीहरिको प्रतिष्ठित करके स्वामिनारायण सम्प्रदायके सिद्धांतोकी और सबको आकर्षित किया। भगवत्प्रदत्त उत्तरदायित्वको यथार्थ रुपसे निभाते हुए वि.सं. १९०८ वैशाख कृष्ण पञ्चमीके दिन वरतालमे पांचभौतिक देहका त्याग किया और भगवान श्रीस्वामिनारायणकी तरह ही सत्संगमें प्रत्यक्ष स्थसे निवास किया । आज भी उनका प्रत्यक्षत्व सत्संग समाजमे सर्वत्र सर्वदा दृष्टिगोचर होता है ।

❖ ❖ ❖

सालंगपुर निवासी श्रीकष्टभंजनदेवकी महिमा

स.गु. श्रीगोपालानंदजी एकबार बोटाद पधारे। उनके दर्शनार्थ सालंगपुरके ठाकोर वाघाखाचर बोटाद गये । साष्टांग प्रणाम करके जब वह स्वामीश्रीकी सन्निधिमें बैठे तो स्वामीश्रीने सहजमे ही प्रश्न किया कि सब कुशल तो है ? स्वामीश्रीका प्रश्न सुनकर वाघाखाचरके मुख पर चिंताओंकी लकीरे खींच गई। उन्होने अति दीन स्वरमें स्वामीश्रीसे प्रार्थना की - स्वामीजी ! पीछले तीन सालसे अकाल पड रहा है उससे आर्थिक परिस्थितियाँ बहुत कमजोर हो गई है और हमारी इस परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए संतगण भी सालंगपुर आते तो है पर रुकते नहि है अतः सत्संगका भी दुष्काल हो गया है । श्रीजी प्रसादीभूत सालंगपुरकी यह दशा सुनकर दयालु संतका हृदय

पिघल गया । उन्होने ठाकोर वाघाखाचर से कहा - मैं आपको एक भाई देता हुँ जिससे आपकी सब समस्याओंका समाधान हो जायेगा । ठाकोर इस बातमे कुछ समजे नहि अतः स्वामीश्री फिर से बाले कि - सब कष्टोंका भंजन करनेवाले हनुमानजी महाराजकी प्रतिष्ठा मैं सालंगपुरमें कर देता हुँ जिससे आपके सब कष्ट सर्वदाके लिए मिट जायेंगे । इस बातको सुनकर ठाकोर वाघाखाचर भावाभिभूत हो गये और स्वामीश्रीके चरणों में अपना मस्तक रख स्वयं को अति धन्य मानने लगे । तदनन्तर स्वामीश्रीने स्वयं हनुमानजीकी मूर्तिका चित्र तैयार करके शिल्पकार कानजी मिस्त्रीको कहा कि एसी मूर्ति तुम शीघ्र तैयार करो । इस तरफ मूर्तिका काम और सारंगपुर में मंदिर का काम चालु हुआ । परम ऐश्वर्यमूर्ति सद्गुरु गोपालानंद स्वामीके संकल्पसे जो कार्य हो रहा था

उसमे भलां कौन सा विघ्न आना था ? मूर्ति और मंदिरके तैयार होते ही संवत् १९०५ के अश्विन कृष्ण पंचमीके दिन शास्त्रोक्त विधिसे महान प्रतिष्ठोत्सव पूर्वक श्रीकष्टभंजनदेवकी प्रतिष्ठा हुई । प्रतिष्ठाके समय स्वामीश्रीने हनुमानजी महाराजका आह्वान किया। हनुमानजी महाराजका मूर्तिमें प्रवेश होते ही मूर्तिमें कम्पन होने लगा तब स्वामीश्रीने हनुमानजीसे कहा कि - यहाँ भगवान श्रीस्वामिनारायण की निश्रा और आपकी शरणमें जो मनुष्य अपना कोई भी दुःख लेके आयें आप उनके दुःखोंका अंत करके उन्हे सुखी किजीये ।

तदनन्तर स्वामीश्रीने अपने पास जो यष्टिका (लकडी) थी । वह देकर कहा कि - जब किसी प्रकारसेभी उपद्रवका नाश ना हो तब अन्तमें इस यष्टिकासे स्पर्शित जलसे प्रोक्षण करनेसे तुरंत ही उपद्रव शांत हो जायेगा ।

समयचक्र फिरता रहा समय पे समय बितता रहा लेकिन आश्चर्यकी बात यह है कि आज भी कष्टभंजन देव सालंगपुरमें प्रत्यक्ष बिराजमान है और जो कोई भी दीन दुःखी आता है उनकी पीड़ा दूर करते है। यहाँ मनुष्य रोता हुआ आता है और भगवान श्रीस्वामिनारायण और हनुमानजी महाराजके प्रतापसे हँसता हुआ जाता है। यहाँ किसीभी तरहके भेदभावके बिना सबके कष्टोंका निराकरण होता है। आज सारे संसारमें सालंगपुर निवासी श्रीकष्टभंजनदेवकी महिमा सुविदित है। इस महिमाको कर्णपरम्परासे सुनकर अनेक जाँत-पाँत के लोग यहाँ आते है और सुखी होते है। यहाँ आनेवाले श्रद्धालु यात्रिकोंके लिए यहाँ ठहरने और भोजनादिक की व्यवस्था सुचारु रुपसे कि जाती है। जीवनमें प्रारब्धवश या अन्य किसी भी कारणसे आया हुआ दुःख यहाँ निवृत्त होता है।

जब कोई भी मनुष्य दुःख निवृत्तिके लिए यहाँ आता है तो उन्हे जो पाठ करनेको दिया जाता है उसकी सुगमताके लिए यहाँ से एक लघु पुस्तिका साथ मे दी जाती है ।

पाठकगणसे नम्र निवेदन है कि कष्टभंजनदेवकी महिमाका जितना भी गान करें अत्यल्प ही रहेगा । अतः अपने जीवनमें अथवा अपने परिवारमें या मित्रमण्डलमें जब किसीको कोई आपत्ति आयें तो बिना संकोच कष्टभंजनदेवकी शरणमें आयें और इस प्रत्यक्ष देवका प्रत्यक्ष अनुभव करें ।

मूल अक्षरमूर्ति योगीराज सद्‌गुरुवर्य श्रीगोपालानन्दस्वामीको भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रदत्त चमत्कारोंका निरुपण करनेवाला भक्तचिंतामणिका १४२वाँ प्रकरण

पूर्वछायो

अनुप ईडर देशमां, धन्य धन्य टोडला गाम ॥
धन्य धन्य द्विजनी जातिने, ज्यां ऊपन्या भक्त अकाम ॥१॥
योगी पूर्व जन्मना, जेने वा'ला संगे अति वा'ल ॥
प्रभु संगाथे प्रकट्या, खरा भक्त नाम खुशाल ॥२॥
शमदमादि साधने पूरा, तपसी त्यागी तन ॥
जाणे योग अष्टांगने, पूरण सिद्ध पावन ॥३॥
बाळपणामां वात बीजी, रुचि नहि जेने रंच ॥
अति अभाव अंग वर्ते, पेखीने विषय पंच ॥४॥

चोपाई

एवा भक्त ते खरा खुशाल, जेने न गमी संसारी चाल ॥
बाळपणामां राच्या भजने, बीजुं कांई गम्युं नहि मने ॥५॥

एम करतां थयो सतसंग, चड्यो अति चित्ते तेनो रंग ॥
आवी अंगमां खरी खुमारी, ऊतरे नहि केनी उतारी ॥६॥
करे ध्यान महाराजनुं नित्य, अति प्रकट प्रभुमां प्रीत्य ॥
एम करतां कांईक दन, थयो प्रकाश पोताने तन ॥७॥
कोटि कोटि सूरज समान, छायो तेजे जमी आसमान ॥
तेमां कडाका थया छे त्रण, मान्युं लोके आव्युं आज मरण ॥८॥
आ तो प्रलय थवानी पेर, एम कहेवा लाग्या घेरोघेर ॥
तेह कडाका ने तेज तेह, षट् जोजने जणाणुं एह ॥९॥
जोई आश्चर्य पामियां लोक, वध्यो आनंद थयां अशोक ॥
ते प्रताप श्रीमहाराज तणो, शुं कहीए मुखथी घणो घणो ॥१०॥
वळी एक दिवसनी वात, कहुं वर्णवी वळी विख्यात ॥
करतां भजन महाराज तणुं, तनभान भूल्या छे आपणुं ॥११॥
थई निरावरण निज वृत्ति, दीठा रातमां रांदलपति ॥
थयो तेनो अतिशे प्रकाश, हुवो अंतरतमनो नाश ॥१२॥

ते पण प्रभुतणो परताप, एम खुशाले मान्युं छे आप ॥
पछी जेवुं चिंतवे जे वारे, थाय तेवानुं तेवुं ज त्यारे ॥१३॥
ते तो जाणे लोक प्रसिद्ध, कहे आ तो महा मोटा सिद्ध ॥
एम जने मन ज्यारे जाण्युं, तेवा समामां वर्षाते ताण्युं ॥१४॥
त्यारे सर्वे आवी लाग्या पाय, कहे करो वृष्टि दःख जाय ॥
मनुष्य पशु पीडाय अत्यंत, आव्या अरजे अमे पीडावंत ॥१५॥
माटे मोटा करो तमे महेर, करो वर्षात तो जाये घेर ॥
एवी सांभळी लोकनी वाणी, समर्या खुशाले सारंगपाणि ॥१६॥
करे स्तवन मनना दयाळ, आव्यो वर्षात त्यां ततकाळ ॥
वूठो त्रण्य दन लगी तेह, काळा उनाळा जेवामां मेह ॥१७॥
लोक आवी लाग्या पछी पाय, कहे धन्य धन्य द्विजराय ॥
तम जेवो नहि जगमांय, तमारे सहजानंद सहाय ॥१८॥
मान्यो परचो मनुष्ये मळी, वळी वात बीजी ल्यो सांभळी ॥
पोत्ये पंड्या थै मांडी निशाळ, आव्यां भणवा नानां बाळ ॥१९॥

तेने भणावे छे थोडुं घणुं, करावे भजन हरितणुं ॥
करतां बाळक स्वामीनुं ध्यान, सर्वे थयां छे समाधिवान ॥२०॥
करे अलौकिक आवी वात, सुणी सहु थया रळियात ॥
पछी खुशाल कहे सुणो बाळ, मारे जावुं ज्यां होय दयाळ ॥२१॥
त्यारे बाळके जोडिया हाथ, तमने तेडवा आवे छे नाथ ॥
धरी द्विजनुं रुप महाराज, ते तो आवे छे तमारे काज ॥२२॥
पछी आव्या नाथ साथे चाल्या, वाटे अन्न जळ वा'ले आल्या ॥
आव्या जेतलपुर लगी साथ, पछी अद्रश्य थया छे नाथ ॥२३॥
हता जेतलपुरमां स्वामी, नीरख्या खुशाले अंतरजामी ॥
कही वाटनी वात खुशाले, हसी सांभळी सरवे वाले ॥२४॥
कहे नाथ ब्राह्मणने भाळी, भाई तुं छो मोटो भाग्यशाळी ॥
थयो परचो तने ए जाणे, बीजी वात मनमां म आणे ॥२५॥
त्यारे ब्राह्मण कहे महाराज, हुं तो आव्यो छुं भणवा काज ॥
त्यारे नाथ कहे घणुं सारुं, एमां गमतुं घणुं अमारुं ॥२६॥

पछी खुशाल संतमां रह्या, एक समे वडोदरे गया ॥
तियां सतसंगी रहे बहु, करे स्वामीनुं भजन सहु ॥२७॥
एक द्विज सदाशिव नामे, नित्य खुशालने कर भामे ॥
आवी नित्य जमो मारे घेर, मारे छे श्रीमहाराजनी महेर ॥२८॥
जियां लगी रहो तमे आंई, बीजे जमवा न जावुं क्यांई ॥
पछी खुशाल जमवा गया, आव्या नाथ जमवाने तियां ॥२९॥
त्यारे सदाशिव लाग्यो पाय, नीर्खी नाथ तृपत न थाय ॥
पछी सुंदर कराव्यो थाळ, जम्या दया करीने दयाळ ॥३०॥
सदाशिव वळी एनी नार, देखे बीजा न देखे लगार ॥
पण जमतां जाणे सहु जन, थाय अर्धु जे होय भोजन ॥३१॥
शाक पाक धर्युं होय थाळे, थाय ओछुं ते सरवे भाळे ॥
जळनो होय जे आबखोरो, पिवे नाथ ते थाय अधूरो ॥३२॥
होय मुखवास आगे मेल्यो, आपे नाथ ते पाछो जमेलो ॥
आपे जमेल पाछी सोपारी, जोई आश्चर्य थाय नरनारी ॥३३॥

एम मास लगी अहोनिश, जम्या हरि खुशाल हमेश ॥
ज्यारे ज्यारे जमे ज्यां खुशाल, त्यारे त्यारे जमे संगे लाल ॥३४॥
जमे जन हाथे नाथ नित्ये, ते तो खुशाल भक्तनी प्रीत्ये ॥
एम खुशाल विप्रने वळी, पूर्या परचा बहु नाथ मळी ॥३५॥
हता आपे ते वैराग्यवंत, संसारथी उदासी अत्यंत ॥
पछी धार्यो छे धार्मिक योग, तजी भवतणा वैभोग ॥३६॥
धर्युं नाम ते गोपाळानंद, थया योगेश्वर जगवंद ॥
फरे दयाळु सरवे देश, आपे मुमुक्षुने उपदेश ॥३७॥
कर्या महाराजे मोटेरा बहु, माने मोटा मुनिवर सहु ॥
एक दिवस लई मंडळी, आव्या वडोदरा मांही वळी ॥३८॥
तियां सतसंगी आव्या सांभळी, लाग्या पाय सहु लळीलळी ॥
मोटां भाग्य जाय नहि कहीए, आव्या तमे अष्टमी समैये ॥३९॥
करो उत्सव आणी हुलास, बांधो हिंडोळो कहे एम दास ॥
त्यारे गोपाळ स्वामी कहे सारुं, करशे हरि गमतुं तमारुं ॥४०॥

त्यां तो आव्यो अष्टमीनो दन, कर्युं व्रत सहु मळी जन ॥
बांध्यो हिंडोळो हरिने काज, आवी झूल्या प्रकट महाराज ॥४१॥
सारी सुंदर मूरति शोभे, जोई जोई जन मन लोभे ॥
नीरखी हरखियां सहु जन, करे सहु साथ धन्य धन्य ॥४२॥
आज अलौकि दर्शन दीधां, तमे अमने कृतार्थ कीधां ॥
तिया सतसंगी कुसंगी हता, दीठा प्रकट सहुए झूलता ॥४३॥
झुल्या हिंडोळे घडी बे चार, पछी न दीठा ते निरधार ॥
सहु रह्यां छे आश्चर्य पामी, कहे धन्य सहजानंद स्वामी ॥४४॥
आप्यो परचो प्रभुजी आपे, स्वामी गोपाळानंदने प्रतापे ॥
वळी गोपाळानंद स्वामीने, पूर्यो परचो कहुं करभामीने ॥४५॥
एक समे नावे वरसात, मरे मनुष्य थाय उतपात ॥
शोध्ये शहेरमां न मळे अन्न, पड्यो काळ कहे सहु जन ॥४६॥
पछी सतसंगी सर्वे मळी, आव्या ज्यां हती मुनि मंडळी ॥
बेठा गोपाळ स्वामीने पास, कहे नथी जीववानी आश ॥४७॥

मरे शहेरमां मनुष्य बहु, अन्न विना पीडाय छे सहु ॥
देता दाम मळे नहि अन्न, कहो केम करी जीवे जन ॥४८॥
माटे स्तुति प्रभु पासे करीए, थाय मेघ तो अमे ऊगरिये ॥
कहे गोपाळ स्वामी दयाळ, करो भजन सर्वे मराळ ॥४९॥
बेठा भजने घडी बे-चार, आव्यो मेघ थयो जेजेकार ॥
वूठो त्रण्य दन लगी घन, काळा उनाळामां रात दन ॥५०॥
सतसंगी कुसंगिये जाण्युं, थयो पर्चो सहुए प्रमाण्युं ॥
लाग्या गोपाळ स्वामीने पाय, धन्य धन्य तमे मुनिराय ॥५१॥
बोल्या गोपाळ स्वामी ते प्रत्ये, जे थयुं ते श्रीजीनी सामर्थ्ये ॥
बीजा थकी ते कांई न थाय, ठालो भूलो फोगट फुलाय ॥५२॥
एम परचा हुं केटलां कहुं, थया गोपाळ स्वामीने बहु ॥
कहेतां लखतां न आवे पार, कहे निष्कुलानंद निरधार ॥५३॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक श्रीसहजानंदस्वामी शिष्य
निष्कुलानंदमुनि विरचिते भक्तचिंतामणि मध्ये
श्रीजीमहाराजे गोपाळानंदस्वामीने परचा पूर्या
ए नामे एकसोने बेंतालीसमुं प्रकरणम्

॥ ॐ श्रीहरये नमः ॥

॥ श्रीकष्टभंजनहनुमते नमः ॥

कष्टभंजन हनुमानजीकी आरती

जय कपि बलवंता, प्रभु जय कपि बलवंता,
सुरनर मुनिजन वंदित, पदरज हनुमंता ।
.....जय कपि० १

प्रौढ प्रताप पवन सुत, त्रिभुवन जयकारी; (२)
असुर रिपु मद गंजन, भय संकटहारी ।
.....जय कपि० २

भूत पिशाच विकट ग्रह, पीडत नहि जंपे; (२)
हनुमंत हाक सुणीने, थर थर थर कंपे ।
.....जय कपि० ३

रघुवीर सहाय ओळंग्यो, सागर अति भारी; (२)
सीता शोध ले आये, कपि लंका जारी ।
.....जय कपि० ४

राम चरण रति दायक, शरणागत त्राता; (२)
प्रेमानंद कहे हनुमंत, वांछित फळदाता ।
.....जय कपि० ५

हनुमत्स्तोत्रम्

नमस्त आञ्जनेयाय वायुपुत्राय धीमते ।
रामदूताय महते सुग्रीवसचिवाय च ॥१॥
नमोऽस्तु ते महावीर ! महाबलपराक्रम ।
वैरिभीषणरूपाय रावणत्रासदायिने ॥२॥
नमो हरावताराय शिलावृक्षायुधाय च ।
रक्षः सैन्यविमर्दाय नमस्तुभ्यं यशस्विने ॥३॥
नमो हनुमते तुभ्यं लंकानगरदाहिने ।
दशग्रीवसुतघ्नाय सीताशोक-विनाशिने ॥४॥
नमोऽस्तु ते महायोगिन् ! सदा शुद्धान्तरात्मने ।
सीतारामातिहृद्याय नमस्ते चिरजीविने ॥५॥
नमः कपीन्द्र ! ते नित्यं सर्वरोगविनाशिने ।
भूतप्रेतपिशाचादिभयविद्रावणाभिध ॥६॥
नमस्तुभ्यं रामभद्रपुरुप्रेष्ठाय भूयसे ।
नमोऽतिस्थूलरूपाय सूक्ष्मरूपधराय च ॥७॥
नमोऽखिलभयघ्नाय निर्भयाय महात्मने ।
बालार्कद्युतिदेहाय मुष्टिप्रहरणाय च ॥८॥

नमो लंकेश्वरोद्यानभंगवित्रासितास्त्रप ।
रामनामानुरक्ताय लक्ष्मणप्राणदाय ते ॥९॥
नमस्ते विश्ववन्द्याय विजयाय वरीयसे ।
भक्तसंकटसंहन्त्रे धर्मनिष्ठाय जिष्णवे ॥१०॥
नमो नैष्ठिकवर्याय विजनाराण्यवासिने ।
भक्ताभीष्टप्रदात्रे च पाण्डवप्रियकारिणे ॥११॥
नमो धर्मारिनाशाय विमलाय च भास्वते ।
नित्यं रामायणकथाश्रवणोत्सुकचेतसे ॥१२॥
नमो धार्मिकसेव्याय ब्रह्मण्याय सुरार्चित ।
तुभ्यं बृहद्व्रतप्रेष्ठ सर्वपापापहारिणे ॥१३॥
नमो दारिद्र्यदुःखघ्न मारुते बंधखण्डन ।
सुखदाय शरण्याय नमस्ते ऋषिवृत्तये ॥१४॥
नमो वरद ते नित्यं रामध्यानाद्यनाकुल ।
सुखाराध्य दुराराध्य नमस्ते दिव्यरूपिणे ॥१५॥
नमोऽर्कपुष्पहाराय तुभ्यं मामभयँ कुरु ।
दर्शनं देहि साक्षात् ते नमस्ते सर्वदर्शिने ॥१६॥

श्रीमद्सत्संगिजीवनके इस स्तोत्रके पहले श्लोकसे पहला दूसरे श्लोकसे दूसरा, इस प्रकार

सोलह श्लोकोंसे क्रमशः अक्षरोंका उद्धरण करनेसे निम्निलिखित मन्त्र बनता है ।

मंत्र

ॐ नमो हनुमते भयभञ्जनाय
सुखं कुरु फट् स्वाहा ।

यदि किसी को आध्यात्मिक आदि किसी भी प्रकारकी आपत्ति आये, तब सर्वप्रथम हनुमानजीका यथाविधि पूजन करे । बादमें हनुमानजी का ध्यान करे और एकाग्र चित्तसे अर्थानुसंधानके साथ उपर्युक्त स्तोत्रका पाठ करे । तत्पश्चात् इस स्तोत्रसे निकाले गये उपर्युक्त षोडशाक्षर मंत्रका दश हज़ार जप करे और अंतमें आगे दिये गये नीतिप्रवीण निगमागम शास्त्रबुद्धे... इस हनुमत्स्तोत्र का पाठ एक पाँव पर खड़े रहकर करे । इस प्रकार एक मास तक करनेसे किसीभी प्रकारका कष्ट अवश्य दूर होता है और इच्छित फलकी प्राप्ति होती है ।

हनुमत्स्तोत्रम्

(श्रीशतानंदमुनि विरचितम् ।)

नीतिप्रवीण ! निगमागमशास्त्रबुद्धे !
राजाधिराजरघुनायकमन्त्रिवर्य ! ।
सिन्दूरचर्चितकलेवर! नैष्ठिकेन्द्र !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥१॥

सीतानिमित्तजरधूत्तमभूरिकष्ट-
प्रोत्सारणैकक सहाय ! हतास्त्रपौध ! ।
निर्दग्धयातुपतिहाटक राजधाने !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥२॥

दुर्वार्यरावणविसर्जितशक्तिघात-
कण्ठासुलक्ष्मणसुखाहृतजीववल्ले ! ।
द्रोणाचलानयननन्दितरामपक्ष !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥३॥

रामागमोक्तितरितारितबन्धवयोग-
दुःखाब्धिमग्नभरतार्पितपारिबर्ह ! ।
रामाङ्घ्रिपद्ममधुपीभवदन्तरात्मन् !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥४॥

वातात्मके सरिमहाकपिराट्तदीय-
भार्याञ्जनीपुरुतपःफलपुत्रभाव! ।
ताक्ष्यौपमोचितवपुर्बलतीव्रवेग !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥५॥
नानाभिचारिकविसृष्टसवीरकृत्या
विद्रावणारुणसमीक्षणदुःप्रधर्ष्य! ।
रोगघ्नसत्सुतदवित्तदमन्त्रजाप !
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥६॥
यन्नामधेयपदकश्रुतिमात्रतोऽपि
ये ब्रह्मराक्षसपिशाचगणाश्च भूताः ।
ते मारिकाश्च सभयं ह्यपयान्ति
स त्वं श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥७॥
त्वं भक्तमानससमीप्सितपूर्तिशक्तौ
दीनस्य दूर्मदसपत्नभयार्तिभाजः ।
इष्टं ममापि परिपूरय पूर्णकाम!
श्रीरामदूत! हनुमन्! हर सङ्कटं मे ॥८॥

इति श्रीशतानन्दमुनिविरचितं श्रीहनुमत्स्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्री मारुतिस्तोत्रम्

(मुनिवर मुक्तानंदजीकृत हिन्दी अनुवाद)

नीतिप्रवीण सबे निगमागम,
शास्त्रमें बुद्धि रु बंके अपारा,
श्री रघुनाथके मंत्री अनुप हो,
ताहिते रामकुं प्राणसे प्यारा.
प्रौढ शरीर सिंदूरसे सोहत,
नैष्ठिकके मध्य ईन्द्र उदारा,
श्रीरघुवीरके दूत महाबल,
कष्ट हरो हनुमान हमारा. (१)
जानकी कारण श्रीरघुनाथके,
अंतरमें भयो कष्ट अनंता,
तारन ताही सहायक अेक,
हने मनुजाद महा बलवंता.
जारी निशाचर नाथकी लंका,
महासिद्ध खूब प्रशंसत संता,

श्रीरघुवीरके दूत महाबल,
संकट मोर हरो हनुमंता. (२)
रावणके सुत शक्ति चलाई सो,
आई लगी अतिशे दुखकारी,
कंठमें प्रान रामानुजके हित,
लाये संजीवनी औषधि भारी,
लाये उठाई द्रौणाचल वेगसे,
रामके पक्षकी पीर सो टारी,
श्रीरघुवीर के दूत महाबल,
पीडा हरो हनुमान हमारी. (३)
श्रीरघुनाथके आगमकी सो,
वधाई ले भर्तकुं वेग सुनाई,
रामवियोग महादुःखसागर,
डुबत भर्तसे मोज हुं पाई,
जानकीनाथके अंघ्रिसरोजमें,
भृंगज्युं जास मति लपटाई,

श्रीरघुनाथके दूत महाबल,
संकटमें रहो मोर सहाई. (४)
वायुस्वरुप जो केसरी बानर,
माननी तास सो अंजनी नामा,
तास महा तपरुप भयो सुत,
वायुकुमार अति अभिरामा,
वेग खगेश समान वपु दृढ,
वज्र के अंग अति बलधामा,
श्रीरघुवीर के दूत हरो सब,
संकटमें मोय करो निष्कामा. (५)
बहुत प्रकारकी डाकिनी शाकिनी,
भैरव भूत अति बिकराळा,
कृत्या वीर पिशाच निशाचर,
जाहिकुं देखी डरे तत्काला.
ज्याहिको मंत्र जपे सुत वित्तद,
टारत ताप रु रोग बिशाळा,

श्रीरघुवीरके दूत सदा मम,
कष्ट हरो हनुमंत कृपाळा. (६)
ज्याहिको नाम सुनिके ततक्षण,
भागत है ब्रह्मराक्षस घोरा,
ज्याके प्रतापसे प्रेत निशाचरु,
भागत भूत कबंध कठोरा,
ज्याके प्रतापसे डरे सब डाकिनी,
जोगनी जादु भगे चहुं दूरा,
श्रीरघुवीरके दूत महाबल,
हे हनुमंत हरो दुःख मोरा. (७)
आपके भक्त अनन्य हे ताहीके,
बांछित कामके पूरन हारा,
दुर्बल दीन रिपुभय व्याकुल,
ताहीके हो तुम ईष्ट उदारा,
वांछित मोर सो देहु दयानिधि,
वंदत हुं तोय बारही बारा,

श्रीरघुवीरके दूत महाबल,
कष्ट हरो हनुमंत हमारां. (८)
हाक सुने जबही तुमरी तब,
राक्षसकी त्रिय गर्भकुं त्यागे,
जंत्र रु मंत्र के जान जादुगर,
नाम तुमारा सुनी डरी भागे,
ताहीते संकट नाश करो कहे,
मुक्त सदा प्रभुसो अनुरागे,
श्री रघुवीरके दूत मदाबल,
हे हनुमंत अेही वर मागे. (९)

यह अष्टक जो पढे तास सब संकट नासे ।
रामदूत हनुमंत सदा दृग आगे भासे ॥
विघन होत सब नाश मगन होउं हरि गुन गावे ।
पाप पुंज सब टरत बहोरी भवमें नहि आवे ॥
धन धान्य पुत्र संपत्ति बढे कृष्ण चरण रति पावही ।
मुनि मुक्त कहे सो भक्त के संकट निकट न आवहि ॥

॥ इति श्री मुक्तानंदमुनि प्रणीत मारुतिस्तोत्रम् ॥

जनमङ्गल स्तोत्रम्

नमोनमः श्रीहरये बुद्धिदाय दयावते ।
भक्तिधर्माङ्गजाताय भक्तकल्पद्रुमाय च ॥१॥
सुगन्धपुष्पहाराद्यैर्विविधैरुपहारकैः ।
सम्पूजिताय भक्तौघैः सिताम्बरधराय च ॥२॥
नाम्नामष्टोत्तरशतं चतुर्वर्गमभीप्सिताम् ।
सद्यः फलप्रदं नृणां तस्य वक्ष्यामि सत्पतेः ॥३॥
अस्य श्रीजनमङ्गलाख्यस्य श्रीहर्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रमन्त्रस्य शतानन्द ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । धर्मनन्दनः श्रीहरिर्देवता । धार्मिक इति बीजम् ।
बृहद्व्रतधर इति शक्तिः ।
भक्तिनन्दन इति कीलकम् ।
चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

(अथ ध्यानम्)

वर्णिवेषरमणीयदर्शनं मन्दहासरुचिराननाम्बुजम् ।
पूजितं सुरनरोत्तमैर्मुदा धर्मनन्दनमहं विचिन्तये ॥४॥

श्रीकृष्णः श्रीवासुदेवो नरनारायणः प्रभुः ।
भक्तिधर्मात्मजोऽजन्मा कृष्णो नारायणो हरिः ।।५।।
हरिकृष्णो घनश्यामो धार्मिको भक्तिनन्दनः ।
बृहद्व्रतधरः शुद्धो राधाकृष्णेष्टदैवतः ।।६।।
मरुत्सुतप्रियः कालीभैरवाद्यतिभीषणः ।
जितेन्द्रियो जिताहारस्तीव्रवैराग्य आस्तिकः ।।७।।
योगेश्वरो योगकलाप्रवृत्तिरतिधैर्यवान् ।
ज्ञानी परमहंसश्च तीर्थकृत्तैर्थिकार्चितः ।।८।।
क्षमानिधिः सदोन्निद्रो ध्याननिष्ठस्तपःप्रियः ।
सिद्धेश्वरः स्वतन्त्रश्च ब्रह्मविद्याप्रवर्तकः ।।९।।
पाषण्डोच्छेदनपटुः स्वस्वरुपाचलस्थितिः ।
प्रशान्तमूर्तिर्निर्दोषोऽसुरगुर्वादिमोहनः ।।१०।।
अतिकारुण्यनयन उद्धवाध्वप्रवर्तकः ।
महाव्रतः साधुशीलः साधुविप्रप्रपूजकः ।।११।।
अहिंसयज्ञप्रस्तोता साकारब्रह्मवर्णनः ।
स्वामिनारायणः स्वामी कालदोषनिवारकः ।।१२।।

सच्छास्त्रव्यसनः सद्यःसमाधिस्थितिकारकः ।
कृष्णार्चास्थापनकरः कौलद्विट् कलितारकः ॥१३॥
प्रकाशरूपो निर्दम्भः सर्वजीवहितावहः ।
भक्तिसम्पोषको वाग्मी चतुर्वर्गफलप्रदः ॥१४॥
निर्मत्सरो भक्तवर्मा बुद्धिदाताऽतिपावनः ।
अबुद्धिहृद्ब्रह्मधामदर्शकश्चापराजितः ॥१५॥
आसमुद्रान्तसत्कीर्तिः श्रितसंसृतिमोचनः ।
उदारः सहजानन्दः साध्वीधर्मप्रवर्तकः ॥१६॥
कन्दर्पदर्पदलनो वैष्णवक्रतुकारकः ।
पञ्चायतनसन्मानो नैष्ठिक व्रतपोषकः ॥१७॥
प्रगल्भो निःस्पृहः सत्यप्रतिज्ञो भक्तवत्सलः ।
अरोषणो दीर्घदर्शी षड्ऊर्मिविजयक्षमः ॥१८॥
निरहङ्कृतिरद्रोह ऋजुः सर्वोपकारकः ।
नियामकश्चोपशमस्थितिर्विनयवान् गुरुः ॥१९॥
अजातवैरी निर्लोभो महापुरुष आत्मदः ।
अखण्डितार्षमर्यादो व्याससिद्धान्तबोधकः ॥२०॥
मनोनिग्रहयुक्तिज्ञो यमदूतविमोचकः ।
पूर्णकामः सत्यवादी गुणग्राही गतस्मयः ॥२१॥

सदाचारप्रियतरः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
सर्वमङ्गलसद्भूपनानागुणविचेष्टितः ॥२२॥
इत्येतत्परमं स्तोत्रं जनमङ्गलसंज्ञितम् ।
यः पठेत्तेन पठितं भवेद्वै सर्वमङ्गलम् ॥२३॥
यः पठेच्छृणुयाद्भक्त्या त्रिकालं श्रावयेच्च वा ।
एतत्तस्य तु पापानि नश्येयुः किल सर्वशः ॥२४॥
एतत्संसेवमानानां पुरुषार्थचतुष्टये ।
दुर्लभं नास्ति किमपि हरिकृष्णप्रसादतः ॥२५॥
भूतप्रेतपिशाचानां डाकिनीब्रह्मरक्षसाम् ।
योगिनीनां तथा बालग्रहादीनामुपद्रवः ॥२६॥
अभिचारो रिपुकृतो रोगश्चान्योऽप्युपद्रवः ।
आयुतावर्तनादस्य नश्यत्येव न संशयः ॥२७॥
दशावृत्त्या प्रतिदिनमस्याभीष्टं सुखं भवेत् ।
गृहिभिस्त्यागिभिश्चापि पठनीयमिदं ततः ॥२८॥

इति श्रीशतानन्दमुनिविरचितं श्रीजनमङ्गलाख्यं
श्रीहर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जनमङ्गल नामावलि

१ ॐ श्रीकृष्णाय नमः

२ ॐ श्रीवासुदेवाय नमः

३ ॐ श्रीनरनारायणाय नमः

४ ॐ श्रीप्रभवे नमः

५ ॐ श्रीभक्तिधर्मात्मजाय नमः

६ ॐ श्रीअजन्मने नमः

७ ॐ श्रीकृष्णाय नमः

८ ॐ श्रीनारायणाय नमः

९ ॐ श्रीहरये नमः

१० ॐ श्रीहरिकृष्णाय नमः

११ ॐ श्रीघनश्यामाय नमः

१२ ॐ श्रीधार्मिकाय नमः

१३ ॐ श्रीभक्तिनन्दनाय नमः

१४ ॐ श्रीबृहद्व्रतधराय नमः

१५ ॐ श्रीशुद्धाय नमः

१६ ॐ श्रीराधाकृष्णेष्टदैवताय नमः

१७ ॐ श्रीमरुत्सुतप्रियाय नमः

१८ ॐ श्रीकालीभैरवाद्यतिभीषणाय नमः

१९ ॐ श्रीजितेन्द्रियाय नमः

२० ॐ श्रीजिताहाराय नमः

२१ ॐ श्रीतीव्रवैराग्याय नमः

२२ ॐ श्रीआस्तिकाय नमः

२३ ॐ श्रीयोगेश्वराय नमः

२४ ॐ श्रीयोगकलाप्रवृत्तये नमः

२५ ॐ श्रीअतिधैर्यवते नमः

२६ ॐ श्रीज्ञानिने नमः

२७ ॐ श्रीपरमहंसाय नमः

२८ ॐ श्रीतीर्थकृते नमः

२९ ॐ श्रीतैर्थिकार्चिताय नमः

३० ॐ श्रीक्षमानिधये नमः

३१ ॐ श्रीसदोन्निद्राय नमः

३२ ॐ श्रीध्याननिष्ठाय नमः

३३ ॐ श्रीतपःप्रियाय नमः

३४ ॐ श्रीसिद्धेश्वराय नमः

३५ ॐ श्रीस्वतंत्राय नमः

३६ ॐ श्रीब्रह्मविद्याप्रवर्तकाय नमः

३७ ॐ श्रीपाषण्डोच्छेदनपटवे नमः

३८ ॐ श्रीस्वस्वरुपाचलस्थितये नमः

३९ ॐ श्रीप्रशान्तमूर्तये नमः

४० ॐ श्रीनिर्दोषाय नमः

४१ ॐ श्रीअसुरगुर्वादिमोहनाय नमः

४२ ॐ श्रीअतिकारुण्यनयनाय नमः

४३ ॐ श्रीउद्धवाध्वप्रवर्तकाय नमः

४४ ॐ श्रीमहाव्रताय नमः

४५ ॐ श्रीसाधुशीलाय नमः

४६ ॐ श्रीसाधुविप्रप्रपूजकाय नमः

४७ ॐ श्रीअहिंसयज्ञप्रस्तोत्रे नमः

४८ ॐ श्रीसाकारब्रह्मवर्णनाय नमः

४९ ॐ श्रीस्वामिनारायणाय नमः

५० ॐ श्रीस्वामिने नमः

५१ ॐ श्रीकालदोषनिवारकाय नमः

५२ ॐ श्रीसच्छास्त्रव्यसनाय नमः

५३ ॐ श्रीसद्यःसमाधिस्थितिकारकाय नमः

५४ ॐ श्रीकृष्णार्चास्थापनकराय नमः

५५ ॐ श्रीकौलद्विषे नमः

५६ ॐ श्रीकलितारकाय नमः

५७ ॐ श्रीप्रकाशस्नाय नमः

५८ ॐ श्रीनिर्दम्भाय नमः

५९ ॐ श्रीसर्वजीवहितावहाय नमः

६० ॐ श्रीभक्तिसम्पोषकाय नमः

६१ ॐ श्रीवाग्मिने नमः

६२ ॐ श्रीचतुर्वर्गफलप्रदाय नमः

६३ ॐ श्रीनिर्मत्सराय नमः

६४ ॐ श्रीभक्तवर्मणे नमः

६५ ॐ श्रीबुद्धिदात्रे नमः

६६ ॐ श्रीअतिपावनाय नमः

६७ ॐ श्रीअबुद्धिहृते नमः

६८ ॐ श्रीब्रह्मधामदर्शकाय नमः

६९ ॐ श्रीअपराजीताय नमः

७० ॐ श्रीआसमुद्रान्तसत्कीर्तये नमः

७१ ॐ श्रीश्रितसृंसतिमोचनाय नमः

७२ ॐ श्रीउदाराय नमः

७३ ॐ श्रीसहजानन्दाय नमः

७४ ॐ श्रीसाध्वीधर्मप्रवर्तकाय नमः

७५ ॐ श्रीकन्दर्पदर्पदलनाय नमः

७६ ॐ श्रीवैष्णवक्रतुकारकाय नमः

७७ ॐ श्रीपञ्चायतनसन्मानाय नमः

७८ ॐ श्रीनैष्ठिकव्रतपोषकाय नमः

७९ ॐ श्रीप्रगल्भाय नमः

८० ॐ श्रीनिःस्पृहाय नमः

८१ ॐ श्रीसत्यप्रतिज्ञाय नमः

८२ ॐ श्रीभक्तवत्सलाय नमः

८३ ॐ श्रीअरोषणाय नमः

८४ ॐ श्रीदीर्घदर्शिने नमः

८५ ॐ श्रीषड्ऊर्मिविजयक्षमाय नमः

८६ ॐ श्रीनिरहंकृतये नमः

८७ ॐ श्रीअद्रोहाय नमः

८८ ॐ श्रीऋजवे नमः

८९ ॐ श्रीसर्वोपकारकाय नमः

९० ॐ श्रीनियामकाय नमः

९१ ॐ श्रीउपशमस्थितये नमः

९२ ॐ श्रीविनयवते नमः

९३ ॐ श्रीगुरवे नमः

९४ ॐ श्रीअजातवैरिणे नमः

९५ ॐ श्रीनिर्लोभाय नमः

९६ ॐ श्रीमहापुरुषाय नमः

९७ ॐ श्रीआत्मदाय नमः

९८ ॐ श्रीअखण्डितार्षमर्यादाय नमः

९९ ॐ श्रीव्याससिद्धान्तबोधकाय नमः

१०० ॐ श्रीमनोनिग्रहयुक्तिज्ञाय नमः

१०१ ॐ श्रीयमदूतविमोचकाय नमः

१०२ ॐ श्रीपूर्णकामाय नमः

१०३ ॐ श्रीसत्यवादीने नमः

१०४ ॐ श्रीगुणग्राहीणे नमः

१०५ ॐ श्रीगतस्मयाय नमः

१०६ ॐ श्रीसदाचारप्रियतराय नमः

१०७ ॐ श्रीपुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

१०८ ॐ श्रीसर्वमङ्गलसद्रूपनानागुण–
विचेष्टिताय नमः

॥ इति जनमङ्गलनामावली समाप्ता ॥

अथ नारायणकवचम्

(हिन्दी अनुवाद मात्र)

सर्वप्रथम श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायणको नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकारसे न्यास करे—

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः—पादयोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंका स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—जानुनोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों घुटनोंका स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—ऊर्वोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंकी जाँघका स्पर्श करे)।

ॐ नां नमः—उदरे (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर पेटका स्पर्श करे) ।

ॐ रां नमः—हृदि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे हृदयका स्पर्श करे) ।

ॐ यं नमः—उरसि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे छातीका स्पर्श करे) ।

ॐ णां नमः—मुखे (तर्जनी-अँगूठेके संयोगसे मुखका स्पर्श करे) ।

ॐ यं नमः—शिरसि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करे) ।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः—दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिनी तर्जनीके सिरेका स्पर्श करे) ।

ॐ नं नमः—दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी मध्यमा अँगुलीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें) ।

ॐ मों नमः—दक्षिणानामिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ भं नमः—दक्षिणकनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ गं नमः—वामकनिष्ठिकायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ वं नमः—वामानामिकायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ तें नमः—वाममध्यमायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथ की मध्यमाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ वां नमः—वामतर्जन्याम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी तर्जनीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ सुं नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (दाहिने हाथकी चारों अँगुलियोंसे दाहिने हाथके अँगूठेका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे) ।

ॐ दें नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (दाहिने हाथकी चारों अँगुलियोंसे दाहिने हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोर छुए) ।

ॐ वां नमः—वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (बायें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बायें अँगूठेके ऊपरवाला पोर छुए) ।

ॐ यं नमः—वामाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (बायें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बायें हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोर छुए) ।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः—हृदये (तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिकासे हृदयका स्पर्श करे) ।

ॐ विं नमः—मूर्धनि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करे) ।

ॐ षं नमः—भ्रुवोर्मध्ये (तर्जनी-मध्यमासे दोनों भौंहोंका स्पर्श करेः ।

ॐ णं नमः—शिखायाम् (अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे) ।

ॐ वें नमः—नेत्रयोः (तर्जनी-मध्यमासे दोनों नेत्रोंका स्पर्श करें) ।

ॐ नं नमः—सर्वसंधिषु (तर्जनी-मध्यमा और अनामिकासे शरीरके सभी जोड़ों—जैसे कंधा, केहुनी, घुटना आदिका स्पर्श करें) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्राच्याम् (पूर्वकी ओर चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—आग्नेय्याम् (अग्निकोणमें चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—दक्षिणस्याम् (दक्षिणकी ओर चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—नैऋर्त्ये (नैऋर्त्य कोणमें चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्रतीच्याम् (पश्चिमकी ओर चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—वायव्ये (वायुकोणमें चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—उदीच्याम् (उत्तरकी ओर चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऐशान्याम् (ईशानकोणमें चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऊर्ध्वायाम् (ऊपरकी ओर चुटकी बजाये) ।

ॐ मः अस्त्राय फट्—अधरायाम् (नीचेकी ओर चुटकी बजाये) ।

इस प्रकार न्यास करनेसे इस विधिको जाननेवाला पुरुष मन्त्रस्वरूप हो जाता है ॥८-१०॥ इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्यसे परिपूर्ण इष्टदेव भगवान्‌का ध्यान करे और अपनेको भी तद्‌रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवचका पाठ करे ॥११॥

भगवान् श्रीहरि गरुड़जीकी पीठ पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथोंमें शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकारस्वरूप प्रभु सब प्रकारसे सब ओरसे मेरी रक्षा करें। मायासे ब्रह्मचारीका रूप धारण करनेवाले वामन भगवान् स्थल पर और

विश्वरूप श्रीत्रिविक्रम भगवान् आकाशमें मेरी रक्षा करें ॥१३॥ जिनके घोर अट्टहास करनेपर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियोंके गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययूथपतियोंके शत्रु भगवान् नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानोंमें मेरी रक्षा करें ॥१४॥ अपनी दाढ़ों पर पृथ्वीको उठा लेनेवाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान् मार्गमें, परशुरामजी पर्वतोंके शिखरों पर और लक्ष्मणजीके सहित भरतके बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवासके समय मेरी रक्षा करें ॥१५॥ भगवान् नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकारके प्रमादोंसे मेरी रक्षा करें । ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय योगके विघ्नोंसे और त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मबन्धनोंसे मेरी रक्षा करें ॥१६॥ परमर्षि सनत्कुमार कामदेवसे, हयग्रीव भगवान् मार्गमें चलते

समय देवमूर्तियोंको नमस्कार आदि न करनेके अपराधसे, देवर्षि नारद सेवापराधोंसे और भगवान् कच्छप सब प्रकारके नरकोंसे मेरी रक्षा करें ॥१७॥ भगवान् धनवन्तरि कुपथ्यसे, जितेन्द्रिय भगवान् ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयदायक द्वन्द्वोंसे, यज्ञभगवान् लोकापवादसे, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टोंसे और श्रीशेषजी क्रोधवश सर्पोंके गणसे मेरी रक्षा करें ॥१८॥ भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी अज्ञानसे तथा बुद्धदेव पाखण्डियोंसे और प्रमादसे मेरी रक्षा करें । धर्म-रक्षाके लिये महान् अवतार धारण करनेवाले भगवान् कल्कि पापबहुल कलिकालके दोषोंसे मेरी रक्षा करें ॥१९॥ प्रातःकाल भगवान् केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहरके पहले भगवान् नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर

और दोपहरको भगवान् विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें ॥२०॥ तीसरे पहरमें भगवान् मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकालमें ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्तके बाद हृषीकेश, अर्धरात्रिके पूर्व तथा अर्धरात्रिके समय अकेले भगवान् पद्मनाभ मेरी रक्षा करें ॥२१॥ रात्रिके पिछले पहरमें श्रीवत्सलांछन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान् जनार्दन, सूर्योदयसे पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण संध्याओंमें कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें ॥२२॥ हे सुदर्शन ! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये)-की तरह है । आपके किनारेका भाग प्रलयकालीन अग्निके समान अत्यन्त तीव्र है । आप भगवान्‌की प्रेरणासे सब ओर घूमते रहते हैं । जैसे आग वायुकी सहायतासे सूखे घास-फूसको जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रुसेनाको शीघ्र-से-

शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये ॥२३॥ हे कौमोदकी गदा ! आपसे छूटनेवाली चिनगारियोंका स्पर्श वज्रके समान असह्य है । आप भगवान् अजितकी प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ । इसलिये आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहोंको अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओंको चूर-चूर कर दीजिये ॥२४॥ हे शंखश्रेष्ठ ! आप भगवान् श्रीकृष्णके फूँकनेसे भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओंका दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियोंको यहाँसे झटपट भगा दीजिये ॥२५॥ हे भगवान्की श्रेष्ठ तलवार ! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है । आप भगवान्की प्रेरणासे मेरे शत्रुओंको छिन्न-भिन्न कर दीजिये । हे भगवान्की प्यारी ढाल! आपमें सैंकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं । आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओंकी आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें

सदाके लिये अन्धा बना दीजिये ॥२६॥ सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगनेवाले जन्तु, दाढ़ोंवाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियोंसे हमें जो-जो भय हों और जो-जो हमारे मंगल के विरोधी हों—वे सभी भगवान् के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करनेसे तत्काल नष्ट हो जायँ ॥२७-२८॥ बृहद्, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रोंसे जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान् गरुड़ और विश्वक्सेनजी अपने नामोच्चारणके प्रभावसे हमें सब प्रकारकी विपत्तियोंसे बचायें ॥२९॥ श्रीहरिके नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणोंको सब प्रकारकी आपत्तियोंसे बचायें ॥३०॥ जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत् है, वह वास्तवमें भगवानका ही स्वरुप है—इस सत्यके प्रभावसे

हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायँ ॥३१॥ जो लोग परब्रह्म और आत्माका अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टिमें भगवान्‌का स्वरूप समस्त विकल्पों—भेदोंसे रहित है, फिर भी वे अपनी माया-शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियोंको धारण करते हैं यह बात निश्चितरूप से सत्य है अतः सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान् श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें ॥३२-३३॥ जो अपने भयंकर अट्टहाससे सब लोगोंके भयको भगा देते हैं और अपने तेजसे सबका तेज ग्रस लेते हैं वे भगवान् नृसिंह दिशा-विदिशामें, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर-सब ओर हमारी रक्षा करें ॥३४॥

॥ इतिश्री नारायणकवच संपूर्णम् ॥

श्रीहरिकवच

विप्रकुलभूषण, सावर्णिगोत्रतिलक, सद्धर्म के रक्षक, भक्ति और धर्मके पुत्र श्रीकृष्णको मैं नमस्कार करता हुँ। योगीराजसे भी दुष्कर ऐसे योगका आचरण करनेवाले, समस्त साधुगुण सम्पन्न, अपनी लावण्यतासे कामदेवके गर्वको खण्डित करनेवाले, नैष्ठिकव्रतके पोषक, प्रणतजनकी पीड़ाको हरण करनेवाले, माता भक्तिके हर्षको वर्धित करनेवाले, अच्युत नारायणमुनि, श्रीसहजानंद स्वामीको मैं नमस्कार करता हुँ । मैं नित्यानन्दमुनि वर्णिराज धर्मनन्दन श्रीहरिको नमस्कार करके शुभ हरिकवच कह रहा हुँ ।

इस श्रीहरिकवच स्तोत्र माला मन्त्रके व्यासमुनि ऋषि है । अनुष्टुप छन्द है । भक्तिधर्मनन्दन श्रीहरि इसके देवता है । भक्तिधर्मविवर्धन यह कीलक है ।

धर्मरक्षक यह बीज है । बृहद्व्रतधर यह शक्ति है । मेरे सकल मनोरथोंकी सिद्धि के लिए जप में इसका विनियोग है ।

अथ करन्यासः

ॐ श्रीहरिकृष्णाय नमोऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीभक्तिधर्मात्मजाय नमस्तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ श्रीहरये नमो मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीकृष्णाय नमोऽनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीनीलकण्ठाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीस्वामिनारायणाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इति करन्यासः

अथ षडंगन्यासः

ॐ श्रीहरिकृष्णाय नमो हृदयाय नमः ।
ॐ श्रीभक्तिधर्मात्मजाय नमः शिरसे स्वाहा ।
ॐ श्रीहरये नमः शिखायै वषट् ।

ॐ श्रीकृष्णाय नमः कवचाय हुम् ।
ॐ श्रीनिलकण्ठाय नमो नेत्राभ्यां वौषट् ।
ॐ श्रीस्वामिनारायणाय नमोऽस्त्राय फट् ।

इति षडंगन्यासः ।

ध्यान

श्रीकृष्ण, पुरुषोत्तम, धर्मपुत्र, वर्णीन्द्र, ईश्वरों के भी ईश्वर, सर्वोत्तम उच्च सिंहासन पर विराजित, भक्तसमूहसे पूजित, सुखकर, करुणारुपी अमृतके सागर, जिनके चरणकमल मुनिओं द्वारा सुचारुरुपसे सेवित है ऐसे श्वेत वस्त्रोंको धारण करनेवाले धर्मप्रिय श्रीहरिका मैं हृदयमें ध्यान करता हुँ ।

जिनके गुण-कर्म और नामोंका श्रवण पुण्यदायी है वे श्रीहरि पूर्व दिशामें मेरी रक्षा करें । यमदूतोसे रक्षण करनेवाले श्रीहरि दक्षिणदिशामें मेरी रक्षा करें । भक्तोंकी असद्वासनाओंका उच्छेदन करनेवाले श्रीहरि

पश्चिम दिशामें मेरी रक्षा करे । इच्छारामके अग्रज श्रीहरि उत्तर दिशामें मेरी रक्षा करें । ईशान कोणमें सहजानंद स्वामी मेरी रक्षा करें । हनुमानजी जिनको अत्यंत प्रिय है और हनुमानजीको जो अत्यंत प्रिय है ऐसे श्रीहरि अग्नि एवं नैऋत्य कोण में मेरी रक्षा करें। प्रणतजनोंके दु:खोंको दूर करनेवाले श्रीहरि वायव्य कोणमें मेरी रक्षा करें । सबको मंगलकारी दर्शन है जिनका ऐसे श्रीहरि ऊर्ध्वदिशामें मेरी रक्षा करें । संतगणके सुहृत्, धर्मस्थापक एवं धर्मका पक्ष सुदृढ करनेवाले श्रीहरि अधो दिशामें मेरी रक्षा करें । श्रीहरि प्रात:कालमें मेरी रक्षा करें । श्रीकृष्ण आसंगवकालमें मेरी रक्षा करें । मध्याह्नसे पूर्व धर्मपोषक एवं निरीश्वरमतका खण्डन करनेवाले श्रीहरि मेरी रक्षा करें। विप्रोंके अपराधोको सहन करनेवाले केशव मध्याहनमें मेरी रक्षा करें । ब्रह्मकी निन्दाके श्रवणसे अत्यंत

व्यथित होनेवाले माधव अपराह्न कालमें मेरी रक्षा करें । भक्तोंको आधीन, विप्रात्मा एवं दुष्टोंका नाश करनेवाले श्रीहरि सायंकालमे मेरी रक्षा करें । सर्वकी आत्मा एवं धर्मसर्गके पोषक श्रीहरि मध्यरात्रिमें मेरी रक्षा करें । भक्तिधर्मको आनन्द प्रदान करनेवाले वृषप्रिय रात्रिके शेषभागमें मेरी रक्षा करें । दुर्गपुर में (गढडामें) निवास करनेवाले श्रीहरि संध्या समयमें मेरी रक्षा करें । मुकुन्दानंदवर्णीकी सेवासे संतुष्ट श्रीहरि जलमें सदा मेरी रक्षा करें । भक्ति और धर्मके द्वारा आराधित श्रीहरि विविध स्थलोमें मेरी रक्षा करें। सावर्णिगोत्रतिलक एवं नैष्ठिकोंमें सर्वश्रेष्ठ श्रीहरि आकाशमें मेरी रक्षा करें। महादुर्गमें, घोर वनमें, पर्वत पर, वृक्ष पर, संग्राममें सागरमें और घोर संकटमें स्वयंभू श्रीहरि मेरी रक्षा करें । हरिकृष्ण मेरे शिरकी रक्षा करें । भक्तिनन्दन मेरे ललाटकी रक्षा करें । धार्मिक मेरे मुखकी रक्षा करें । भक्तवल्लभ मेरे दोनो

कर्णोकी रक्षा करें। नैष्ठिकेन्द्र मेरे हनुकी और वृषात्मज मेरे भ्रूयुग्मकी रक्षा करें। भक्तिधर्मात्मज मेरे नेत्रोंकी तथा तपोधन मेरी नासिकाकी रक्षा करें। सिद्धोंके गर्वको खण्डित करनेवाले श्रीहरि मेरे दोनो औष्ठकी और महामुनि मेरी जिह्वाकी रक्षा करें। नीलकण्ठ मेरे दांतो की और प्रियदर्शन श्रीहरि मेरे गालोंकी रक्षा करें। धर्मदेवके सुखसागर श्रीहरि सदा मेरे कण्ठकी रक्षा करें। सर्वजनोके स्वामी मेरे कंधोकी और नितांत जितेन्द्रिय श्रीहरि मेरी भुजाओंकी रक्षा करें। सामवेदका गान करनेवाले श्रीहरि मेरे कोहनीओंकी, हाथोकी और उंगलीओंकी रक्षा करें। योगीराजोंसे भी दुष्कर आचरणवाले महामति श्रीहरि मेरी कांख की रक्षा करें। भक्तिपुत्र महायोगी मेरी छाती की रक्षा करें। कामदेवके गर्वका दलन करनेवाले धर्मपुत्र मेरी जठरकी रक्षा करें। भक्तोंके लिए कल्पवृक्ष समान स्वामिनारायण मेरी नाभिकी रक्षा करें। कृशावस्था में स्थित उद्धव

सम्प्रदायको भली भाँति संपुष्ट करनेवाले श्रीहरि मेरे दोनो पार्श्वकी सर्वथा रक्षा करें। सत्संगिजनोंको अत्यंत प्रिय श्रीनारायणमुनि मेरे पीठ की रक्षा करें। सर्व साधुगुणोंके भण्डार वर्णिराज मेरे कटिप्रदेशकी रक्षा करें। साधुप्रिय श्रीहरि मेरे गुप्तांगकी और भक्तोंके वशमें रहनेवाले श्रीहरि मेरी हड्डियोंकी रक्षा करें। ब्रह्मण्यदेव मेरे ऊरुप्रदेशकी और धर्मधारक मेरे घुंटनोंकी रक्षा करें। स्त्रीओंकी गन्धको सहन करनेमें असमर्थ धर्मनंदन मेरी जंघा और टखनेकी रक्षा करें। भक्तिको हर्षप्रदान करनेवाले श्रीहरि मेरे दोनो पैर और पैरकी उंगलीओंकी रक्षा करें। भयसे रक्षा करनेवाले श्रीहरि मेरे सर्व अंगोकी और विभु मेरे रोम समूहकी रक्षा करें। अनेक भक्तजनोंको आनन्दित करनेवाले श्रीहरि मेरी सर्व ईन्द्रियोंकी रक्षा करें। हृषीकेश मेरे प्राणोंकी और माधव मेरे चित्तकी रक्षा करें। नरनारायण मेरी बुद्धिकी और केशव मेरे मनकी रक्षा करें। धर्मवल्लभ वृन्दावन

चन्द्रमा मेरी आत्माकी रक्षा करें । जितेन्द्रिय श्रीहरि पापोंकी मूल सर्वश्रेयका विनाश करनेवाली और दरिद्रताकी मातारूप निद्रा और प्रमादसे मेरी रक्षा करें । सच्छास्त्रोंका अनुकरण करनेवाली प्रज्ञावाले नारायण गर्वसे मेरी रक्षा करें । योगच्युतिसे योगेश्वर और कर्मबन्धनोसे मुनीश्वर मेरी रक्षा करें । सर्वश्रेय विनाशक कामसे निष्काम मेरी रक्षा करें । क्रोधको जीतनेवाले दयासागर क्रोधरूपी दावानलसे मेरी रक्षा करें । लोभादिक दोषोंका सम्यक् निरूपण करनेवाले श्रीहरि लोभरूपी पारधीसे मेरी रक्षा करें । जितस्वाद श्रीहरि प्रबल रसनेन्द्रियसे मेरी रक्षा करें । मानरहित श्रीहरि सर्वसद्गुणोंको दूषणमें रूपान्तरित करनेवाले मानसे मेरी रक्षा करें । सर्व दुःखोंकी सागर स्पृहासे निःस्पृह श्रीहरि मेरी रक्षा करें । देह और देह के सम्बन्धि जनोमें होनेवाले स्नेहसे निःस्नेह श्रीहरि मेरी रक्षा करे। सन्मार्गसे भ्रष्ट करनेवाले मदरुपी सर्पसे निर्मद श्रीहरि मेरी रक्षा

करें । दम्भरहित और संतमंडल परायण श्रीहरि दम्भसे मेरी रक्षा करें । निर्मत्सर वृषनन्दन मत्सरसे मेरी रक्षा करें । भक्तिधर्मको आनन्दित करनेवाले और दुःखोका हरण करनेवाले श्रीहरि खडे हुए, जाते हुए, बैठे हुए, खाते हुए, पीते हुए और शयन करते हुए मेरी रक्षा करें। सर्वनियन्ता और अद्भुत चरित्र करनेवाले श्रीहरि प्रमत्त-अप्रमत्त अवस्थामें, गिरते हुए, स्खलित होते हुए, छिक्कते हुए, जम्वाई लेते हुए, निद्रा-तन्द्रासे युक्त हुए, गृहमें स्थित और द्वार पर स्थित मुझे जो बाधित करनेको उद्यत है उन सबका शीघ्रही नाश करके मेरी रक्षा करें। मकारपञ्चकका उच्छेदन करनेवाले श्रीहरि दुःसंग, कौण्ड, नास्तिक, शाक्त और शुष्कज्ञानिसे सदा मेरी रक्षा करें । ज्ञानप्रदाता श्रीहरि अज्ञान से मेरी रक्षा करें। संतमंडलके मध्य निवासकी रुचिवाले योगीराज श्रीहरिकृष्ण भक्तिमें होनेवाले अपराधसे मेरी रक्षा करें। धर्मविद्मे

श्रेष्ठ श्रीहरि मार्गमे होनेवाले देवापराधसे मेरी रक्षा करें । भक्ति और धर्मके द्वारा संसेवित श्रीहरि सदाचारसे होनेवाली च्युतिसे मेरी रक्षा करें । द्विजेन्द्रकुलभूषण श्रीहरि कलिकालके दोषोंसे मेरी रक्षा करें । भक्ति और धर्मने जिनके चरण कमलोकी आराधनाकी हैं ऐसे श्रीहरि लोकापवादसे मेरी रक्षा करें । भक्ति-धर्मके द्वारा किये गये तपके फलस्वरूप श्रीहरि देहाभिमानसे मेरी रक्षा करें । अपने प्रतापसे असुरोंको क्षीण करनेवाले श्रीहरि मोह और कुतर्कसे मेरी रक्षा करें । द्वन्द्व रहित श्रीहरि सुख और दुःख संज्ञावाले द्वन्द्वसे मेरी रक्षा करें। निष्परिग्रहवान ईश्वर तृष्णारूप सागरसे मेरी रक्षा करें। समस्तग्रह जिसके भयसे भयभीत रहते है ऐसे विप्रेन्द्र श्रीहरि ग्रहोंसे मेरी रक्षा करें । योगज्ञपुरुषों द्वारा नमस्कृत हुए योगीराज श्रीहरि क्रूर दृष्टिवाले केतुओंसे मेरी रक्षा करें। निष्कामजनवल्लभ और उर्ध्वरेता श्रीहरि शारीरिक

आधि और मानसिक व्याधिरुप पीड़ाओसे मेरी रक्षा करें । सर्वदा समर्थ श्रीहरि दाढोंमें स्थित विषवाले सर्पादिकसे मेरी रक्षा करें । सर्व पापोंका प्रशमन करतेवाले श्रीहरि तमाम पापोंसे मेरी रक्षा करें । अहिंसावृत्तिवाले श्रीहरि हिंसक बाध आदिसे, डाकिनी-भूतप्रेतादिकसे और यक्ष राक्षसादिकसे सदा मेरी रक्षा करें । पुण्यनन्दन श्रीहरि आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिकरुप त्रिविधताप, मारी और दु:स्वप्नोंकी पीड़ाओंसे मेरी रक्षा करे । शास्त्र विरुद्ध स्वकल्पित मतोंके विकटवनोंको जलानेमें दावालन स्वरुप श्रीहरि कुमतिवालोंसे, कुदृष्टिवालोंसे, असत शास्त्रोंसे और दुष्टराजकुलादिकोंसे सर्वत: मेरी रक्षा करें । सज्जनोको प्रिय श्रीहरि स्त्री-द्रव्य और रसमे आसक्तिसे भक्ति और ज्ञानका आडम्बर करके पापमें प्रवृत्त होनेवालोसे मेरी रक्षा करें । सर्व शत्रुओंको भयप्रदान करनेवाले श्रीहरि मारण-उत्सादन-उन्मूलन-द्वेष-मोहनादि कर्म

करनेवाले, विश्वासघाती, दुष्ट, इष्टदेवका द्रोह करनेवाले, आततायी, चोर इत्यादिका शीघ्रही नाश करें । खेत-धन आदि हरण करनेवाले, बन्धनादिक भयप्रदान करनेवाले, विविध प्रकारकी ईति, अन्य दुष्ट जातिवाले, साधुओंको भयप्रदान करनेवाले, शस्त्र प्रहारादिकसे दुःख देनेवाले, धनादिक हरण करनेवाले, शत्रुओ और हिंसक वृत्तिवाले सब श्रीहरिके नामसंकीर्तनसे क्षयको प्राप्त हो । यन्त्र-मन्त्रादिक क्रियासे परेशान करनेवाले, दुष्ट राजा-आमात्यादिक, कुत्सित हृदयवाले, मेरे कार्यको मीटानेवाले, दूसरों को ठगनेवाले, क्रूर कर्म करनेवाले, अभिचार कर्म करनेमें आसक्त, महाक्लेश करनेवाले, म्लेच्छ, पापी, निरंतर दूसरोंके दोषोंका छिद्रान्वेषण करनेवाले और जो कोई भी हमको बाधित करनेके लिए उद्यत है वे सब सर्व समर्थ प्रभुके नाम संकीर्तनसे नाशको प्राप्त हो । वातसे होनेवाले, पित्तसे होनेवाले, कफसे होनेवाले,

सान्निपातिक, एक-दो-तीन-चार-पंदरह-तीस दिन-छह मास और एक वर्षमें शरीरमें उत्पन्न होनेवाले, परम दारुण, जिनका प्रतिकार करना बहुत मुश्किल है ऐसे देह इन्द्रिय और प्राणोंको कम्पित करनेवाले माहेश्वर और वैष्णव ज्वर आदि सहजानन्द नामसे विनष्ट हो । स्वप्नमे होनेवाले महोत्पात, वृद्धग्रह-बालग्रह, अपस्मार, कूष्मांड, पूतना-मातृकादिक और दिनमे रातमे एवं सन्ध्या समयमे दारुण दुःख देनेवाले सभी भगवान नारायणके स्वरसे आहत होकर नाशको प्राप्त हो । उद्भिज, अण्डज, स्वेदज एवं जरायुज जातिवाले जो कोईभी दिनमे - रात में या सन्ध्या समयमें हमें बाधित करनेकी इच्छा रखते हो वे सब सर्वस्वामीओंके भी स्वामी ऐसे श्रीहरिका नाम स्मरण मात्रसे भयभीत हो अपनी गति और बलसे भ्रष्ट होकर दूरसे ही नाशको प्राप्त हो । मैने जो ना कहा हो एसा जो भयस्थान जो कि शरीरके अन्दर हो या बहार वह

सबसे भक्तिधर्मके पुत्र देवदेवेश मेरी रक्षा करे । वज्रसे भी कठोर इस हरिकवचसे आच्छादित मेरा यह शरीर भय एवं अनेक प्रकारकी बाधाओंसे मुक्त हो । अखिल ईश्वरोके भी ईश्वर धर्मनन्दन श्रीहरिके दिव्य एवं अभेद्य इस कवचको धारण करके मैं दिन-रात निर्भयस्थसे विचरण करता हुं । सर्व पापोंका प्रशमन करनेवाला, शरीर और मनकी पीड़ाको दूर करनेवाला, सर्वतः शान्तिप्रदान करनेवाला, परम गोपनीय, समस्त भयका नाश करनेवाला, विजय प्रदान करनेवाला और मनुष्योंको भुक्ति और मुक्ति प्रदान करनेवाला अत्यंत अद्‌भुत यह हरिकवच मैंने कहा । खल, दंभी, धर्ममर्यादाका भेदन करनेवाले, आसुरी प्रकृतिवाले, नास्तिक, लोलुप, अभक्त, भक्तोंका द्रोह करनेवाले, भगवानकी निन्दा करनेवाले और शुष्क ज्ञानीओंको यह कवच न दें । श्रद्धावान, आस्तिक, असूया रहित, निर्मत्सर, भगवान और भक्तजनोंके प्रिय ऐसे भक्तको

यह हरिकवच दें । जो मनुष्य इस हरिकवचको सुस्पष्ट अक्षरोंसे लिखकर कण्ठमें या दक्षिण बाहुमें धारण करता हैं उसकी पग पग पर विजय होती है । जो मनुष्य इसका पाठ करता है, श्रवण करता है या भक्तोकी सन्निधिमें इस कवचको सुनाता है भगवान श्रीहरिकृष्णाकी कृपासे उसके लिए कुछभी दुर्लभ नहि है । इस कवचके प्रभावसे धर्मसर्गमे मुक्तिदायिनी दृढमति होती है और समस्त कल्याणमें विघ्नकारक अधर्म सर्ग पर विजय प्राप्त होती है । इस हरिकवचके प्रभावसे भुक्ति, मुक्ति और ऐकान्तिकी भक्ति प्राप्त होती है । इस कवचका पाठ करनेवाला मृत्युके उपरांत श्रीहरिके गोलोकधामको निश्चित ही प्राप्त करता है । इस हरिकवचकी दस हजार बार आवृत्ति करनेसे भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-ब्रह्मराक्षस-योगिनी-राक्षसी-वद्ध ग्रह-बालग्रह इत्यादि का उपद्रव, शत्रुओं द्वारा किया हुआ अभिचार प्रयोग, अन्य महारोग या उपद्रव

निश्चित ही नष्ट होते है इसमें संशय नहि है । इस कवचकी नित्य पाँच बार आवृत्ति करनेसे मनुष्यको इच्छित फलकी प्राप्ति होती है । अतः गृहस्थ और त्यागी भक्तोंको प्रयत्नपूर्वक इसका पाठ करना चाहिए। इस प्रकार परम पवित्र, अनेकविध शस्त्रों और अस्त्रोंसे अभेद्य, जन्म-मृत्युके भयको हरण करनेवाला, ब्रह्मधाम प्रदान करनेवाला यह हरिकवच सकल जनसमूह द्वारा सर्वदा कीर्तन करने योग्य और धारण करने योग्य है।

॥ इति श्रीसहजानन्दस्वामीशिष्याग्रगण्य-
नित्यानंदमुनि विरचितं श्रीहरिकवचं सम्पूर्णम् ॥

हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरण सरोजरज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवनकुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहुं मोहि, हरहुं कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
जय कपीश तिहुं लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा,
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी,
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेशा,
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र अरू ध्वजा बिराजै,
काँधे मुँज जनेउ साजै ॥

शंकर सुवन केसरीनन्दन,
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर,
रामकाज करीबे को आतुर ॥
प्रभुचरित सुनिबे को रसिया,
रामलखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरी सियही दिखावा,
बिकट रूप धरी लंक जलावा ॥
भीम रूप धरी असुर संहारे,
रामचन्द्रके काज संवारे ॥
लाय संजीवनी लखन जियाये,
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति किन्ही बहुत बडाई,
तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥
सहस्त्र बदन तुम्हरो जस गावै,
अस कही श्रीपति कंठ लगावै ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा,
नारद शारद सहित अहीशा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते,
कबि कोबिद कहि सकै कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीव हि किन्हा,
राम मिलाय राजपद दिन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना,
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानूँ,
लील्यो ताहि मधुर फल जानूँ ॥
प्रभु मुद्रिका मेली मुख मांही,
जलधि लांधी गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जे ते,
सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते ॥
रामदुआरे तुम रखवारे,
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरना,
तुम रक्षक काहुको डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै,
तीनों लोक हाँकते काँपे ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै,
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा,
जपत निरंतर हनुमंत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै,
मन कर्म बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा,
तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै,
सोई अमित जीवनफल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संतके तुम रखवारे,
असुरनिकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधिके दाता,
अस बर दीन जानकी माता ॥
रामरसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपतिके दासा ॥
तुम्हरे भजन रामको भावै,
जनम जनम के दुःख बिसरावै ॥
अंतकाल रघुबर पुर जाई,
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई,
हनुमंत सेई सर्वसुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा,
जो सुमरै हनुमंत बलवीरा ॥
जय जय जय हनुमान गुंसाई,
कृपा करहुं गुस्देव की नाई ॥

जो शतबार पाठ कर कोई,
छुटही बन्दी महासुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा,
होई सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा,
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

// दोहा //

पवनतनय संकटहरन, मंगल मूरति रूप ।
रामलखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति श्री हनुमानचालीसा संपूर्णा ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक स्तुति

मत्तगयन्द छंद

बाल समय रबि भक्षि लियो तब,
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनी करी विनति तब
छाँडि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो.....१
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब,
चाहिय कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विजरूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के शोक निवारो ॥ को. २

अंगदके संग लेन गये सिय,
खोज कपीस ये बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सों जुं,
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय,
सिया - सुधि प्रान उबारो । को. ३

रावन त्रास दइ सियको सब,
राक्षसि सों कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु,
दै प्रभुमुद्रिका शोक निवारो ॥ को. ४

बान लाग्यो उर लछिमन के तब,
प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,
तबे गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।

आनि सजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्रान उबारो । को. ५
रावन युद्ध अजान कियो तब,
नाग कि फाँस सबे सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु,
बंधन काटि सुत्रास निवारो । को. ६
बंधु समेत जबै अहिरावन,
लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिहिं पूजी भली बिधि सों बलि,
देउ सबे मिली मंत्र विचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावन सैन्य समेत सँहारो । को. ७

काज किये बड देवन के तुम,
बीर महाप्रभु देखी बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहि जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कुछ संकट होय हमारो । को. ८

(दोहा)

लालदेह लाली लसे, अरु धरी लाल लंगूर ।
बज्रदेह दानव दलन, जय जय जय कपि शूर ॥

॥ श्री तुलसीदासकृत संकटमोचन
हनुमानाष्टक संपूर्ण ॥

सद्‌गुरु श्रीगोपालानन्द स्वामीकृत श्रीसहजानंदस्वामीका महामन्त्र

इस संप्रदायके आश्रित सत्संगी जनोंको यदि कोई आर्थिक, राजकीय या शारीरिक - पक्षघात, क्षय, दम, भगंदर आदि असाध्य रोगों जैसी विपत्ति आयें और औषध आदि उपायोंसे वह दूर न हो तब घबराना नहीं चाहिए और अपने सम्बन्धी आदि के कहने पर क्षुद्र देवकी उपासना, उसके मन्त्र जप आदि नहीं करने चाहिए या नहीं करवाने चाहिए और अपने इष्टदेव भगवान श्रीस्वामिनारायण की आज्ञाका उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।

ऐसी परिस्थितिमें, महा आपत्तिसे छुटकारा पाने के लिए, सत्संगी जनोंके हितार्थ सद्‌गुरु श्री गोपालानन्द स्वामीने इष्टदेव सहजानन्द स्वामीके मंत्रकी रचना की है । इस मंत्रका जप करनेसे किसी भी

व्यक्तिके असाध्य रोग, राजकीय, आर्थिक आपत्ति आदि संकटोंका नाश होता है ।

इसलिए जो निम्नलिखित मंत्रका जप, नियम और श्रद्धासे विधिपूर्वक करेंगे उनकी मनोवांछित इच्छा परिपूर्ण होगी ।

(१) इस मंत्रजपका आरंभ मंगलवारके दिन करना चाहिए और (१५) पंद्रह दिनमें दस हजार जप पूर्ण करना चाहिए ।

(२) इस मंत्रका जप मन्दिर अथवा पवित्र एकान्त जगहमें बैठकर, घीका दीपक जलाकर और सुगन्धित धूपके साथ पवित्र वातावरणमें करना चाहिए ।

(३) इस मंत्रका जप करनेवाले व्यक्तिको स्त्री द्वारा पकाया भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए। ब्राह्मण द्वारा या अपने हाथसे बनाया भोजन ही ग्रहण करना चाहिए ।

(४) अथवा इस मंत्रका जाप करनेवालेको उपवास करना चाहिए । उपवासमें भी दूध अथवा

केवल फलाहार करना चाहिए । अशक्त व्यक्ति एक बार भोजन कर सकता है ।

(५) इस मंत्रका जप करनेवाले व्यक्तिको सांसारिक कार्य, आलस्य, दिवसकी निद्रा और स्त्रीसंगका त्याग करना चाहिए ।

(६) इस मंत्रका जप करनेवालेको परनिंदा करने और सूननेसे दूर रहना चाहिए ।

(७) इस मंत्रमें संपूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखना अत्यन्त आवश्यक है ।

(८) यह मन्त्र साधारण मन्त्र नहि है अतः इसका शुद्ध उच्चारण अत्यंत आवश्यक है इसलिए पहले किसी विद्वान संत या ब्राह्मणसे उच्चारण शुद्धि शीखकर ही इसका जप करें । अन्यथा विपरीत परिणाम भी हो सकता है ।

इस नियमों का पालन करते हुए निम्निलिखित मंत्रका दश हजार जाप करना चाहिये ।

मंत्र

ॐ ह्रौं ह्रीं ॐ श्रीं ठँ ह्रीं पत्रे पत्रे देवानां ॐ भूते द्वीपे ह्रीं सौं गौं त्रीं योगपीवात्मानं ह्रां ह्रीं भगवते ग्लाँ महाष्टयोगसिद्धिं माँ प्रदात्रे श्रीसहजानन्द परमात्मने नमः औं ठँ भँ ऐं ह्रां जूँ ॐ ॥

इस मंत्र को गोपालानन्द स्वामीके वंशके सत्संगी भाइयों ने गोपालानन्द स्वामीकी हस्तलिखित पुस्तकसे विधिपूर्वक लिखकर दिया है । यह मंत्र सब को उपकारक हो इस हेतुसे यहाँ दिया गया है । अतः श्रद्धापूर्वक, विधिके साथ इस मंत्रका जप स्वयं करें या पवित्र ब्राह्मणसे करवायें तो असाध्य दुःखों एवं असाध्य रोगोंका नाश हो सकता है और इच्छित फल की प्राप्ति भी होती है ।

दिनांक :

दिनांक :

इस पृष्ठोमें दिनांकके अलावा माहिती सिर्फ महाराजश्री के लिए है ।

आपको समजना और पढ़ना जरूरी नहीं है ।

सुबह शाम निम्नलिखित नीति-नियमोंका पालन करें

सुबह में स्नान करके हनुमानजीकी प्रतिमाके सामने बैठकर तेलका दिपक प्रज्वलित करके *''स्वामिनारायण''* नाम की ..... माला और *''हनुमानजी महावीर''* नाम की ..... माला करके इस पुस्तकमेंसे ..... से ..... तक पन्नों का एक बार पाठ करके एक चम्मच हनुमानजीका प्रसादी जल पीना है ।

शाम (रात्रि) को भी हाथ-पाँव धोकर उपर दर्शाए गए माला-पाठ करना है । यह नियम..... दिन/महिना/वर्ष तक करना है । पूजापाठ के आरंभ के बाद..... दिन/महिना/वर्ष पूरा होने पर फिर से बैठक में आना अनिवार्य है । शनिवार या त्यौहार पर आना मना है । यह पुस्तक साथ लाना आवश्यक है ।

कष्टभंजनदेवकी कृपासे कष्ट निवारण होने पर रुपिया.....की मन्नत कोठारीश्री के पते पर भेज दे । (इस पुस्तिकाके आखरी पन्ने में बताये गये पते पर)

सूचना

(१) पुजारीश्री द्वारा दिये गये पूजापाठ श्रद्धा, विश्वास और धीरजपूर्वक नियमानुसार नियमित कीजिये और ऐसी श्रद्धा रखें कि हनुमानजी दादा अवश्य कष्ट दूर करेंगे ।

(२) पूजापाठकी अवधि दौरान डॉक्टर की दवा चल रही हो तो बंध नहीं करनी है । और जरूरत होने पर दवा ले सकते हैं ।

(३) पूजापाठ दौरान कुछ किस्सों में तकलीफ में सुधार हो, बाद में फिरसे हो या बढ़ जाये तो थोड़े दिन में फिर सुधार हो जायेगा । इसलिए बीचमें बताने आनेकी जरूरत नहीं है । परंतु महाराजश्री द्वारा बताया गया समय पूरा हो तब शनिवार और त्यौहारों के दिनोंको छोडकर यह पुस्तिका साथ में लेकर बताने आईये ।

(४) महिनेमें एक बार बोतलमें भरा हुआ प्रसादी का पानी स्वच्छ बर्तनमें डाल कर, खाली बोतलको उबले हुए पानीसे धोकर स्वच्छ करें बादमें बर्तनमें निकाला हुआ प्रसादीका पानी बोतलमें छानकर भर दें ।

(५) अपने घर में जन्म-मरणका सूतक होने पर ११ दिन पूजापाठ बंध रखें ।

(६) जो महिला पूजापाठ करती हैं और वह जब मासिक (M.C.) में हो तो ५ दिन पूजापाठ बंध रखें । उनकी जगह परिवार के अन्य सदस्य पूजापाठ चालु रखे ।

(७) पूजापाठके दौरान तमाम सामाजिक प्रसंग और अपने सभी रीश्तेदारों के वहां जा सकते हैं ।

(८) मुसाफरी अगर नौकरीके प्रसंगसे बहारगाँव जाना पडे तब दियाबत्ती नहीं हो सके तो भी हनुमानजी दादाकी फोटो सन्मुख रखकर पूजापाठ कर लें ।

(९) जो दर्दी मानसिक अस्थिर हो, बहुत बिमार हो या बालक हो तो उसकी जगह घर के अन्य व्यक्ति पूजा करें । दर्दी पूजा करने योग्य होने पर दर्दी स्वयं ही पूजा करे ।

(१०) संतान प्राप्ति के लिए जो दंपति पाठ में बैठा हो वह गर्भधारण के तीन महिने होने पर पूजा में बैठने के लिए आये । यदि डॉक्टर की इजाजत न हो तो सिर्फ पति अकेला यह पुस्तक लेकर आये । और डिलेवरी के बाद ४२ दिन पूजा बंध रखे, बादमें बच्चा तीन महिने का होने पर दादा के दर्शनके लिए लाये । तब तक पूजा चालु रखें ।

(११) जिन्हें पाठ पढ़नेकी सूचना में ..... से ..... में डेस (–) की निशानी की हो तो उसको वह पाठ करनेकी आवश्यकता नहि है ।

कृपया ध्यान रखें

साळंगपुर हनुमानजी दादाकी पूजामें बैठनेके लिये निम्नलिखित दिन छोडकर पधारीयें ।

(१) कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (अन्नकूट दर्शन, नूतनवर्ष)

(२) कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाईदूज)

(३) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (हनुमानजी जयंती)

(४) श्रावण कृष्ण अमावास्या

(५) आश्विन कृष्ण पंचमी (पाटोत्सव)

(६) आश्विन कृष्ण चतुर्दशी (कालीचौदश)

(७) आश्विन कृष्ण अमावास्या (दीपावली)

(८) सूर्य-चंद्र के ग्रहणकाल में

उपर के दिनोंमें साळंगपुर मंदिरमें पूजापाठकी विधि बंध रहती हैं ।

प्रतिदिन पूजापाठ का समय

प्रातः ८-०० सायं: ४-००

पाठके समयसे एक घण्टा पहले आकर नारायण कुंडमें स्नान करके पाठमें बैठा जाता है । इसलिए साथमें शुद्ध कपडे अवश्य लायें ।

दर्शन एवं आरती का समय

मंगला आरती : प्रातः ५-३० आरती ।

श्रृंगार आरती : प्रातः ७-०० बजे
शनिवार-मंगलवार-पूर्णिमा को

संध्या आरती : ऋतुके अनुसार, संध्या समय पर

दर्शन बंध

सुबह : ६-३० से ७-०० (बाळभोग)

दोपहर :१०-३० से ११-०० (राजभोग)
१२-०० से ३-००

संध्या : संध्या आरती के बाद
४५ मिनिट (सायंभोग)

रात्रि : ९-०० से सुबह ५-३० तक

साळंगपुर तीर्थधाम के दर्शनीय स्थल

(१) श्री कष्टभंजनदेव हनुमानजी मन्दिर
(मुख्य निज मन्दिर)

(२) यष्टिका (लकडी) - श्रीहनुमानजी महाराजकी दाहिनी ओर स.गु. श्री गोपालानन्द स्वामीकी प्रसादी की यष्टिका (लकडी)।

(३) कुवाँ - श्री कष्टभंजनदेव हनुमानजी मन्दिर (मुख्य निज मन्दिर) में प्रसादीका कुँवा है, जिसमेंसे जल लेकर आज भी हनुमानजी महाराजको स्नान पान कराते हैं ।

(४) भगवान श्रीस्वामिनारायणका मन्दिर ।

(५) भगवान श्रीस्वामिनारायणकी प्रसादीकी बैलगाड़ी, ढौलीया, बाजोठ, पथ्थर और अलग अलग लकडीया।

(६) नारायण कुंड - भगवान श्री स्वामिनारायण जब कभी भी साळंगपुर आते थे तब नारायण कुंड में स्नान करते थे इसलिए ये महान प्रसादी का पवित्र स्थान है ।

आज भी भूत-प्रेत-आधि-व्याधि, उपाधिसे पीड़ित लोगों को यहाँ स्नान कराके मन्दिरमें पाठ में बैठाये जाते है ।

(७) जीवाखाचर का दरबारगढ - भगवान स्वामिनारायण जब भी साळंगपुर आते थे तब यहाँके राजा जीवाखाचरके दरबारगढमें ही रहते थे । ऐसा दर्शनीय उत्तम पवित्र स्थान आज भी है । जहाँ १८ वचनामृत भगवानने कहे थे ।

(८) श्रीनिलकंठ महादेवजी - जब भी भगवान स्वामिनारायण साळंगपुर आते थे तब इस महादेवजीकी पूजा करते थे । यह मन्दिर धर्मशालामें है ।

(९) प्रसादीकी छत्री - मन्दिरके पटाङ्गणमें प्रसादी की छत्री हे जहाँ बैठकर भगवान श्री स्वामिनारायणने भोजन किया था ।

(१०) प्रसादीका चौरा - श्रीहरिके चरणोंसे पवित्र साळंगपुर गाँवका चौरा, यहाँ अनेकों बार प्रभु पधारे थे ।

पूजापाठ के बाद आपका कष्ट निवारण होने पर दी गई मन्नत की राशि (रुपिया) तुरंत मनीओर्डर (पोस्ट) या चेक/ड्राफ्ट से "श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी मंदिर" के नाम से नीचे दर्शाये गये पते पर भेज दें ।

अथवा रुबरु आने पर काउन्टर पर राशि जमा करवाके रसीद ले लें ।

कोठारी स्वामीश्री,
श्रीकष्टभंजनदेव हनुमानजी मंदिर
मु. साळंगपुर (हनुमान), ता. बरवाला,
जि. बोटाद, गुजरात. भारत. पीन-382450.
फोन : (02711) 241202, 241408
Website : www.salangpurhanumanji.com
E-mail : shreesalangpur@gmail.com

नोंध